चन्दामामा
नवम्बर १९८२
Rs 1.75

GOLD SPOT

WALT DISNEY'S

Jungle Book

Crown Collection

'गोल्डस्पॉटर्स जंगल बुक अल्बम'

मुफ़्त

पाइये और 'गोल्डस्पॉटर्स फ़न किट' जीतिए.

अब गोल्ड स्पॉट की नीले क्राउन वाली हर बोतल के क्राउन में जंगल बुक के एक रंगीन पात्र का चित्र होगा.

अपने जंगल बुक पात्र को पाने के लिए क्राउन के अंदरवाले प्लास्टिक को सावधानीपूर्वक हटाइये. चित्र प्लास्टिक की दूसरी ओर छपा है.

जब आपके पास छः विभिन्न चित्र इकट्ठे हो जायें तो उन्हें प्रवेश फ़ार्म* पर चिपकायें और उसके बदले में एक सुंदर जंगल बुक अल्बम प्राप्त करें.

फिर जंगल बुक पात्रों के चित्र इकट्ठे करते रहें और अल्बम में लगाते जायें यहीं से मज़ा आना शुरू होता है क्योंकि आप अपने मित्रों से दोहरे चित्र बदल सकते हैं. जब आपका अल्बम पूरी ३६ तस्वीरों से भर जाये तो आप विशेष गोल्डस्पॉटर्स 'फ़न किट' जीतेंगे.

जल्दी कीजिये, अलबम स्टॉक सीमित है इस लिए खत्म होने से पहले ही अपना अलबम ले लीजिये.

*प्रवेश फ़ार्म के लिए समाचार पत्रों में देखते रहिए या अपने निकट के किसी गोल्ड स्पाट विक्रेता से प्राप्त कीजिये. (नोट : यह योजना केवल कुछ चुने हुए क्षेत्रों में ही चालू है.)
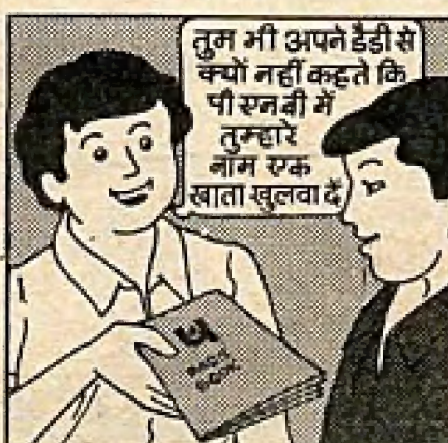
मुन्ना का खाता असली बैंक में कैसे खुला

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 25 (Hindi)

1st Prize: Hemchandra, Agra. *2nd Prize:* Sajid Arif Syed, Mojupuri. Ku. Sonal R. Jagirdar, Ujjain. Surjeet Kour, Karnal. *3rd Prize:* Uday Chandra Singh, Ranchi. G. S. Praveen Vijaywargta, Hyderabad-500 002. Surender Singh, Amretsar-143 001. Manas Kumar Nath, New Delhi-110 017. Pushakal Kumar Srivastava, Gorakhpur. Avinash Gurajar, Bilaspur. Gireesh Vasant Chiddenar, Digras. Sandeep Kumar Jain, Delhi-110 009. Ku. Babita Dhanuravedi, Baroda-390 004. Miss Sudha I Vasu, Bombay-400 067.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

यह बात बड़ी विवेकपूर्ण मानी जाएगी कि प्रत्येक व्यक्ति उसे जो कुछ संपत्ति प्राप्त है, उससे संतुष्ट रहे और अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप और उन्नति करने का प्रयास करे। ऐसा न होकर लोभ में पड़कर कुछ ही क्षणों में अमीर बनने का जो संकल्प करता है, वह अवश्य खतरों में फंस जाता है! यह सत्य हमें "लोभ का फल" नामक कहानी के द्वारा विदित होता है!

अमर वाणी

मातापितृभ्यां जमात्राभ्रात्रा पुत्रेण भार्यया।
दुहित्रा दासवर्गेण विवादं न समाचरेत ॥

[माता-पिता, दामाद, पुत्र, भाई, बेटी और सेवकों के साथ शत्रुता मोल लेना उचित नहीं है।]

वर्ष : ३५ नवम्बर १९८२ अंक : ३

एक प्रति : १-७५ :: वार्षिक चन्दा : २१-००

लोभ का फल

रत्नपुर गाँव में यशोदानंदन नामक एक दूकानदार रहा करता था। उसकी दूकान एक चौराहे के नुक्कड़ पर थी, इस वजह से उसकी चीज़ों की बड़ी अच्छी बिक्री हो जाती थी। फिर भी उससे वह संतुष्ट न था और ज़्यादा कमाने का उपाय सोचा करता था।

एक दिन यशोदानंदन अपनी दूकान पर बैठे हुए था, तब उस रास्ते से गुजरनेवाला एक भील युवक उसे दिखाई पड़ा। वैसे कई बार उसने भील जाति के लोगों को देखा था, लेकिन उस युवक की वेष-भूषा और चाल-ढाल ने उसे बरबस अपनी ओर आकृष्ट किया। उसने सुन रखा था कि कुछ भील लोग मंत्र-तंत्र द्वारा गढ़े हुए ख़जाने का पता बताने में कुशल होते हैं!

यशोदानंदन ने भील युवक को पुकारा, अपनी दूकान के पास आने पर उसे आदर पूर्वक बिठाया और पूछा–"मैंने सुना है कि जंगल में बसनेवाले तुम भील सरदारों को धन की ज़्यादा ज़रूरत नहीं होती, क्या यह बात सच है?"

भील युवक मुस्कुराकर चुप रहा। इस पर यशोदानंदन बड़ी अदब से बोला–"मेरी कमाई इतनी कम है कि मुझे अपना परिवार चलाने में बड़ी तक़लीफ़ होती है। मेरी कमाई के बढ़ने का कोई उपाय बता सकते हो?"

भील युवक ने दूकान में रखी चीज़ों की ओर नज़र डालकर कहा–"ऐसा लगता है कि आप की दूकान की चीज़ों की बड़ी अच्छी बिक्री हो जाती है। क्या आप बता सकते हैं कि रोज़ आप को कितने रुपयों का फ़ायदा होता है?"

यशोदानंदन उदास स्वर में बोला–"साधारण दिनों में हो तो पचास रुपय

प्रभुदेव सिंह

और पर्व-त्योहार के दिनों में तो क़रीब सौ रुपये मिल जाते हैं।"

"इसका मतलब है कि आपकी बड़ी अच्छी कमाई हो जाती है। इससे संतुष्ट हो जाना अच्छा होगा न?" भील युवक ने कहा।

"संतुष्ट कैसे हो सकता हूँ? में बचपन से व्यापार करता आ रहा हूँ, लेकिन कोई खास उन्नति नहीं दिखाई देती। मेरे पीछे जिन लोगों ने व्यापार शुरू किया, उनमें से कई लोग लखपति और करोड़पति बन बैठे हैं। भील सरदारजी, तुम लोग जिस प्रदेश में रहते हो, उधर कहीं गड़े खजाने हों, तो उनका पता क्यों नहीं बताते?" यशोदानंदन ने दीनतापूर्वक पूछा।

भील युवक पल भर सोचता रहा, तब अपनी थैली में से एक ताड़ पत्र निकाला। उस पर लेखनी से कुछ लिखा, यशोदानंदन के हाथ देकर बोला—"आप इसे ले जाकर जंगल में बसनेवाले हमारे भील सरदार के हाथ दे दीजिए, वे आप को खजाने का पता बता देंगे।"

यशोदानंदन बड़ी खुशी के साथ ताड़ पत्र लेकर दूसरे दिन सवेरे अपने घर से निकल पड़ा और संध्या तक भील बस्ती पहुँचा। भील सरदार ने ताड़ पत्र पढ़कर यशोदानंदन का अच्छा सत्कार किया और दूसरे दिन बड़े तड़के ही खजाने के पास चलने का आश्वासन दिया।

उस दिन रात को यशोदानंदन खजाने के बारे में सोचता रहा, इस कारण उसे रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन बड़े सवेरे भील सरदार ने यशोदानंदन को बुला भेजा, उसे जंगल पार करवाकर एक मैदान में ले गया। वहाँ पर उसके हाथ में दो चमड़े के थैले दिये। उनमें से एक थैली पानी से भरा था और दूसरा एकदम खाली था।

भील सरदार ने उसे समझाया—"यशोदानंदन, सुनो; यहाँ से रेगिस्तान शुरू होता है। तुम उस पगडंडी से होकर

जाओगे, तो दुपहर तक रेगिस्तान के बीच में फैले एक पहाड़ के पास पहुँच जाओगे। उसका नाम आशाओं का पहाड़ है। उस पहाड़ की गुफ़ा में सोने के सिक्कों के ढेर लगे हुए हैं। तुम उस खाली थैले को सिक्कों से भर दो। दूसरे थैले में जो पानी है, तुम्हारे लौटने तक पीने के काम देगा। तुम्हारे लौटने पर आधे सिक्के मैं लूँगा, बाक़ी तुम्हारे होंगे।"

यशोदानंदन ने ख़ुशी के साथ सर हिलाया। उस रेगिस्तान से होकर चल पड़ा और दुपहर तक आशाओं के पहाड़ के पास पहुँचा। तब तक थैले का आधा पानी चुक गया था।

पहाड़ी गुफ़ा के अन्दर सोने के सिक्कों के ढेर को देखते ही यशोदानंदन की आँखें चौंधिया गईं। एक थैले को सिक्कों से भरने पर उसके दिमाग में यह विचार आया कि दूसरे थैले का पानी फेंककर उसको भी सिक्कों से भर देना अच्छा होगा। भील बस्ती पहुँचने तक किसी तरह से प्यास को सहा जा सकता है।

इस विचार के आते ही यशोदानंदन ने थैले का पानी फेंककर दोनों थैलों को सिक्कों से भर दिया। तब उन थैलों को कंधों पर लटकाकर वापस चल पड़ा। धूप कड़ी थी, सर और पैर तपने लगे। इस वजह से थोड़ी दूर चलते ही उसे प्यास लगी। दोनों थैलों के बोझ से कंधे दुखने लगे। पानी की खोज में वह इधर-उधर नज़र दौड़ाने लगा।

अचानक उसे उसी रास्ते से एक मुसाफ़िर आ निकला। उसके कंधे पर पानी का एक घड़ा लटक रहा था।

यशोदानंदन ने उसकी ओर आशा भरी दृष्टि दौड़ाकर पूछा—"महाशय, मेरी जीभ सूखती जा रही है, थोड़ा पानी पीने को देंगे?"

"मैं इसीलिए आया हूँ। एक अंजुली भर पानी की क़ीमत दो अंजुली भर सोने के सिक्के हैं। तुम्हें मेरी शर्त मंजूर हो तो

मैं तुमको बेशक पानी पिला सकता हूँ ।" मुसाफ़िर ने कहा ।

यशोदानंदन थोड़ी देर सकुचाता रहा, फिर प्यास की तड़पन को न सहन करने के कारण उसे दो अंजुली भर सोना दिया और एक अंजुली भर पानी पिया ।

एक घंटा बीतने पर यशोदानंदन की प्यास और बढ़ गई । इतने में कोई दूसरा आदमी उसके सामने से आ गुजरा । उस आदमी से यशोदानंदन ने पानी माँगा ।

उसने अपनी शर्त बताई–"एक अंजुली भर पानी की क़ीमत चार अंजुली भर सोना है । क्या तुम्हें मेरी शर्त मंजूर है ?"

यशोदानंदन थोड़ी देर हिचकिचाता रहा, पर प्यास न सहन करने की हालत में चार अंजुली भर सोना देकर एक अंजुली भर पानी पिया ।

थोड़ी दूर और चलने पर फिर उसे प्यास लगी । वह सोचने लगा कि पहले की भांति कोई पानी ले जानेवाला मिल जाए तो क्या ही अच्छा होगा । इतने में ही उधर से एक आदमी निकला । उसने पूछा–"क्या तुम्हें प्यास लग रही है ? आठ अंजुली भरकर सोना दोगे तो मैं एक अंजुली भर पानी दूंगा ।"

"उफ ! इतना ज्यादा दाम ? तुम्हारे पानी की मुझे जरूरत नहीं है ।" यों डांटकर यशोदानंदन अपनी प्यास पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते हुए चल पड़ा ।

पर वह पानीवाला भी यशोदानंदन के पीछे चलने लगा, इसे देख यशोदानंदन को थोड़ा-सा डर लगा। उसने पूछा—"तुम मेरे पीछे क्यों चलते हो?"

वह आगंतुक हँसकर बोला—"तुम डरो मत! यक़ीन रखो, तुम्हारे ज़िंदा रहते तुम्हारे सिक्कों को छुऊँगा तक नहीं।"

उसकी बात पूरी न हो पाई थी, पानी माँगने का संकेत करते हुए वह बेहोश हो गिर पड़ा। आगंतुक ने उसके मुँह पर पानी छिड़क दिया और उसके होश में आने पर पीने के लिए पानी दे दिया।

यशोदानंदन को लगा कि अब उसके बदन में जान आ गई है। आगंतुक ने उसे बताया कि उसके पीछे तीन अंजुली पानी खर्च हो गया है और उसकी क़ीमत चौबीस अंजुली सोना है, तब वह उतना ही सोना लेकर चला गया। अब यशोदानंदन के पास सिर्फ़ आधा थैला सोना बच रहा।

यशोदानंदन जब भील बस्ती में पहुँचा, तब उसके पास सिर्फ़ आधा थैला सोना देख भील सरदार बोला—"ओह! तुम मेरी बात का ख्याल किये बिना लोभ में आ गये हो? तुम अव्वल दर्जे के लोभी हो। तुम्हारी क़िस्मत खोटी है।" इसके बाद अपनी शर्त के मुताबिक़ उसने आधा थैला सोना ले लिया।

यशोदानंदन दुख में भरकर बोला—"भील सरदार! मुझे आशाओं के पहाड़ के पास जाने का एक बार और मौक़ा दो।"

"सुनो, ज़िंदगी में किसी को भी एक ही बार उस पहाड़ के पास जाने का मौक़ा होता है। यदि एक बार और तुम उस पहाड़ के पास जाओगे, तो भी उस पहाड़ी गुफा को बन्द पाओगे।" भील सरदार ने समझाया।

इसके बाद यशोदानंदन पैर घसीटते हुए दो दिन की यात्रा के बाद अपने घर पहुँचा। उसे खजाना हाथ लगने से दूर रहा, बल्कि उत्सव के दिनों में दूकान बंद रखने की वजह से पाँच सौ सिक्कों का फ़ायदा भी जाता रहा।

[१२]

[भील सरदारों के दूत का नरवाहन ने अपमान किया, इस पर उन लोगों ने युद्ध की तैयारियाँ शुरू कीं; उनका विचार था कि पहाड़ पर स्थित शिथिल दुर्ग पर अधिकार करके वहाँ से लड़ाई जारी करे। नरवाहन ने क़िले को घेरने के लिए अपने सैनिकों को भेजा, लड़ाई शुरू हो गई। बाद...]

"पहाड़ के नीचे सैनिकों का कोलाहल तथा हाथियों के चिंघाड़ सुनकर क़िले की दीवारों पर खड़े दो युवक नीचे उतरते हुए बोले–" दुश्मन भेड़ियों वाली बस्ती तक आ पहुँचा है। उनके हाथियों पर हमारे सैनिकों ने सिंहों को उकसाया है। दुश्मन के हाथी घबरा कर पीछे की ओर भागते चले जा रहे हैं। उनके सिपाही भी घबराये हुए हैं।" यों कहते उत्साह में आकर तालियाँ बजाने लगे। मैं दौड़ कर उन भील युवकों के पास पहुँचा।" शिवदत्त अपनी कहानी सुनाते जा रहा था।

उस वक़्त विजय के घमण्ड में आकर अंधे बनकर आगे बढ़ने वाले नरवाहन के गज सैनिक और उनके पीछे चलने वाले पैदल सैनिक हम को दिखाई दिये। लगभग भेड़ियों वाली बस्ती के समीप उन पर पेड़ों की ओट में से भील युवकों ने अपने

पालतू सिहों को छोड़ दिया। भीकर गर्जन के साथ आगे बढ़ने वाले सिहों को देख हाथी भड़क कर पीछे मुड़ कर तितर-बितर होने लगे। हाथियों के द्वारा कुचले जाने व सिहों के मुँह में जाने से बचने के लिए नरवाहन के सारे सैनिक चारों तरफ़ भागने लगे।

तुम लोगों ने बड़ा अच्छा किया। लेकिन क्या उन सिहों को पकड़ कर तुम लोग फिर दुश्मन के उन सैनिकों पर छोड़ सकते हो?" मैंने भील युवकों से पूछा।

"सभी सिहों को फ़िर से पकड़ लेना कदापि संभव नहीं है। कुछ सिह जंगल में भाग जायेंगे।" भील युवकों ने जवाब दिया।

यह जवाब सुनने पर इस तरह की लड़ाई पर से मेरा विश्वास जाता रहा। हथियारों से लैस दुश्मन के उन सैनिकों पर इस तरह सिह और बाघों को छोड़ दे, तो एक बार वे लोग डर कर भाग सकते हैं; लेकिन दूसरी बार वे उचित तैयारी के साथ आकर उन्हें मार भी सकते हैं। यह खतरा भी बना रहेगा।

उस दिन शाम तक उस जंगली प्रदेश में मैं ने इसी तरह के कुछ विचित्र दृश्यों को देखा। एक जगह नरवाहन के सैनिक दल बांधे बैठकर भोजन करने लगे, तब अचानक उन पर पेड़ों पर से एक झाबा फेंका गया। दूसरे ही पल में उसमें से हज़ारों सांप फुत्कारते हुए बाहर निकल

आये । नरवाहन के सैनिक घबरा कर अपने हथियारों को छोड़ जहाँ-तहाँ भाग खड़े हुए । इसके बाद सारे साँप बांबियों तथा पेड़ों पर रेंगते चले गये ।

उस रात को मैंने वृद्ध भील सरदार को बताया कि इस तरह के युद्ध-तंत्र के द्वारा शत्रु पर विजय पाना मुश्किल है । वह भी मेरे इस विचार से सहमत हो गया कि एक बार से ज्यादा काम में न लाये जा सकने वाले हथियारों के द्वारा कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा ।

उस दिन रात को देर तक सोचने के बाद मैं एक निर्णय पर पहुँचा । भील सरदार को सारी बातें मैंने विस्तार के साथ समझाईं । शत्रु सैनिकों को जहाँ तक हो सके, इस क़िले की ओर अकर्षित करके उनका संहार करना होगा । यह शिथिल दुर्ग जिनके हाथों में होगा, वे लोग अपने से चार-पांच गुने ज्यादा सैनिकों का सामना करके उनका वध कर सकते हैं ।

इस के बाद दुश्मन का अंत करने की जिम्मेदारी मुझ पर आ पड़ी । मैं ने वहाँ पर इकट्ठे हुए आठ-दस भील सरदारों को अपनी योजना बताई । दुश्मन ताक़तवर है, तिस पर उस के पास सुशिक्षित सेना है । लेकिन पहाड़ पर स्थित शिथिल दुर्ग पर घेरा डाल कर हराने के लिए उस की घुड सेना और गजसेना किसी काम की नहीं है । खासकर उसे पैदल सेना को ही काम में लाना होगा । ऐसी हालत में

शिथिल दुर्ग तक पहुँचने वाले सारे मार्गों को बंद कर पहाड़ पर चढ़ कर आने वाले सैनिकों पर भारी चट्टानों को लुढ़काना होगा। इसके बावजूद भी अगर दुश्मन पहाड़ पर चढ़ आया तो बचने का कोई रास्ता नही है।

इस वक़्त मुझे जो काम करना है, उसे क़िले की रक्षा कहने के बजाय किले के आसपास के प्रदेशों की सुरक्षा कहना ज्यादा समीचीन होगा। उस शिथिल दुर्ग में रक्षा करने को कुछ नहीं है। लेकिन दुर्ग की रक्षा का बहाना करके दुश्मन को धोखा देकर उसे पहाड़ी रास्तों में फंसा करके सर्वनाश करना होगा। यही मेरी योजना का उद्देश था। यों विचार करके मैंने तीर चलाने में कुशल व्यक्तियों का चुनाव किया और उन्हें दुर्ग के चारों तरफ़ के पेड़ों पर पहरे पर बिठाया। साथ ही शारीरिक बल रखने वाले भील युवकों को बड़ी चट्टानों के पीछे खड़ा करके जरूरत के वक़्त दुश्मन पर उन चट्टानों को लुढ़काने का आदेश दिया।

सूरज जब पश्चिमी दिशा में ढलनेवाला था, तब तक मैंने सुरक्षा का सारा कार्यक्रम पूरा किया। इस बीच शारीरिक बल रखने वाले भील युवक अपने-अपने हथियारों के साथ शिथिल दुर्ग तक पहुँच गये थे, उसी समय उन का पीछा करते हुए नरवाहन के सैनिक भी क़िले के नीचे तक आ धमके।

दुश्मन के सैनिक अनुशासित हो अपने सरदारों के नेतृत्व में एक स्थान पर इकट्ठे न हो पाये थे, इस बीच गुप्त रूप से पेड़ों पर बैठे भील सैनिक उन पर बाणों की वर्षा करने लगे। इस अचानक हमले को देख नरवाहन के सैनिक घबरा उठे और उनमें से कई लोग घायल होकर अपने प्राण खो बैठे। कुछ लोग इस घबराहट में निशाना तक साधे बिना अंधाधुध पेड़ों पर तीर चलाने लगे।

उसी समय नरवाहन के थोड़े सैनिक तलवार हाथ में लिये पहाड़ पर चढ़ने

लगे। उन सैनिकों पर मेरे द्वारा नियुक्त भील युवक बड़ी-बड़ी चट्टानें लुढ़काने लगे। संकरीले मार्गों पर आगे बढ़ने का कोई रास्ता न पाकर दुश्मन के कई सैनिक उन चट्टानों के नीचे दब कर चीखते-चिल्लाते अपनी जान खो बैठे।

चार-पांच घंटे तक भीषण लड़ाई होती रही। इस लड़ाई में नरवाहन के सैनिकों में ज्यादातर लोग पहाड़ पर चढ़ते शिथिल दुर्ग के समीप पहुँचे। मैं ने अच्छी तरह से जान लिया कि पहाड़ के नीचे पेड़ों पर रहने वाले भील युवकों की रक्षा करके उन्हें दुर्ग तक ले जाना इस हालत में नामुमकिन है। पेड़ों पर बैठ कर जहर बूझे तीर छोड़नेवाले भील युवकों का खात्मा करने के लिए नरवाहन के सैनिकों ने एक नया तरीक़ा अपनाया। इसकी कल्पना हमने नहीं की थी।

हाथियों पर सवार सैनिकों को पेड़ों के नीचे पहुँचने का आदेश दिया गया। महावत का इशारा पाकर हाथी अपनी सूंड़ों से पेड़ की डालों को तोड़-तोड़ कर दूर फेंकने लगे। भयंकर गर्जन के साथ टूटनेवाली डालों के साथ उनमें छिपे भील सैनिक भी नीचे गिरने लगे। नीचे गिरने वाले भील युवकों को नरवाहन के सैनिक बेरहमी के साथ अपनी तलवारों से

भोंक कर वध करने लगे। थोड़ी ही देर में सारे भील सैनिक नरवाहन के सैनिकों के हाथों में या तो मार डाले गये या घायल कर दिये गये। जब नरवाहन के सैनिकों को इस बात का विश्वास हुआ कि अब दुश्मन का एक भी सैनिक बच न रहा, तब वे सब दल बांध कर अपने वाहनों पर सवार हो ऊबड़-खाबड़ वाले पहाड़ पर चढ़ने लगे। उस दुर्गम पहाड़ पर चढ़ना हाथियों के लिए बड़ा मुश्किल मालूम होने लगा।

घोड़ों तथा हाथियों को पहाड़ पर चढ़ाने का प्रयत्न करने वाले दुश्मन के सरदारों की बेवकूफ़ी पर मुझे हँसी आ गई।

महावत के अंकुश का आघात पाकर कुछ हाथी लाचार हो पहाड़ के पत्थरों पर चढ़ने की कोशिश करने लगे। सारी ताक़त लगाकर बड़ी मुसीबतों को झेलते हाथी और घोड़े थोड़ी दूर तक पहाड़ पर चढ़ गये, मगर पत्थरों पर फिसल कर चीत्कार करते हाथी और हिनहिनाने वाले घोड़े नीचे की ओर लुढ़कने लगे। वह दृष्य बड़ा ही दर्दनाक था।

मैं अपने अनुचरों तथा बचे हुए भील सिपाहियों के साथ शिथिल दुर्ग की ओर मुड़ गया। जब हम किले के द्वार तक पहुँचे, तब वृद्ध वहाँ पर हमारा इंतजार करनेवाले भील सरदार के साथ मेरी मुलाक़ात हो गई।

वृद्ध सरदार ने मुझे देखते ही गंभीर स्वर में कहा–"शिवदत्त, मुझे ऐसा मालूम होता है कि दुश्मन पर विजय पाना मुश्किल है।" पर वृद्ध के कंठ में किसी तरह की चिंता और भय के चिह्न नज़र न आये। आगे वह बोला–"अगर यही हो जाय तो मुझे कम कम से इस बात का संतोष तो प्राप्त होगा कि हम लोग नरवाहन का सामना किये बिना जानवरों की तरह उसके हाथ तो नहीं लगे। बस, यही मुझे पर्याप्त होगा। इस शिथिल दुर्ग के अन्दर हमारी आखिरी लड़ाई होगी। मैं चाहता हूँ कि आप अपने अनुचरों के साथ किसी सुरक्षित प्रदेश में चले जायें।"

भील सरदार मुझे अपना दृढ निश्चय सुना ही रहा था कि इस बीच क़िले का

सारा प्रदेश नरवाहन के सैनिकों की चिल्लाहटों से गूंज उठा। मर मिटने के लिए तैयार हुए भील सैनिकों ने शिथिल दुर्ग के प्राकारों पर से नरवाहन के सैनिकों का सामना किया। भील सरदार ने भी अपने अधिकार का शासन-चिह्न बने दण्ड को दूर फेंक दिया और एक वीर सैनिक की भांति अपने हाथ में एक तलवार लेकर दुश्मन पर हमला कर बैठा।

उस वक़्त दोनों दलों के बीच जो मुठभेड़ हुई उस का वर्णन नहीं किया जा सकता। जान का मोह छोड़ कर भील सैनिक नरवाहन के सिपाहियों को घास की तरह काटने लगे। मगर नरवाहन के सैनिक भील सैनिकों से संख्या में दस गुने ज्यादा थे और वे लोग धीरे धीरे भील सैनिकों को पीछे की ओर ढकेलते शिथिल दुर्ग तक पहुंचे।

मैं अपने अनुचरों के साथ पीछे हटते क़िले की दीवारों को पार कर बाहर निकल आया। भील सरदार के अंतिम वाक्य मेरे कानों में अब भी गूंज रहे हैं। शायद अब तक आखिरी लड़ाई में वह अपनी जान से हाथ धो बैठा होगा। मैं ने पीछे मुड़ कर दुर्ग की ओर देखा। एक टूटी हुई दीवार पर वृद्ध भील सरदार की कृश काया मेरी आंखों में पड़ी। तलवार की रौनक दिखाते अपने अनुचरों में उत्साह भरते हुए दीवार के बाजू में इकट्ठे नरवाहन के पच्चीस सैनिकों पर वह गरजते हुए कूद पड़ा। उस भील सरदार की लगन

और पराक्रम को देख मेरी देह पुलकित हो उठी और साथ ही मेरी आँखें गीली हो गईं।

मैं अपने अनुचरों के साथ पहाड़ पर से उतर कर समुद्र की ओर चल पड़ा। मैंने निश्चय कर लिया था कि अब उस द्वीप में ठहर जाना किसी भी हालत में हितकर नहीं है। इस बात की सूचना देते हुए समुद्र के तट पर मुझे दो नावें दिखाई दीं कि भाग्य देवी मुझे बिलकुल भूल नहीं बैठी हैं। मैं उसी वक्त समुद्र के तट पर पहुँचा और अपने अनुचरों के साथ उन नावों पर सवार हो पतवारों की मदद से महा समुद्र के बीच निकल पड़ा। मेरे मन में उस वक्त इस बात का विचार ही पैदा नहीं हुआ कि मुझे कहाँ जाना है? किस दिशा में आगे बढ़ना है? मैं बिना किसी प्रकार के लक्ष्य के आगे बढ़ा। इस बीच आप से मुलाक़ात हो गई। मंदर-देव, संक्षेप में यही मेरी कहानी है।" शिवदत्त ने अपनी कहानी समाप्त करते गंभीर सांस ली।

"शिवदत्त, समरसेन की कहानी और आपकी कहानी ये दोनों दो अदभुत और अविस्मरणीय घटनाएँ हैं।" मंदर देव ने कहा।

शिवदत्त इसका कोई जवाब दिये बिना मुस्करा कर रह गया। इस बीच नाव में बैठा एक सैनिक उठ खड़े होकर चिल्ला उठा—"देखिये, उस ओर कोई रोशनी दिखाई दे रही है।"

मंदर देव ने उस दिशा की ओर देखकर कहा—"शिवदत्त, वह कोई द्वीप मालूम होता है। हम लोगों का इस प्रकार बिना लक्ष्य के आगे बढ़ने के बजाय किसी द्वीप में पहुँच जाना उचित होगा न?"

"हाँ, हाँ, हम अपनी नावों को उसी द्वीप की ओर ले जायेंगे। अगर वह मानव जाति के निवास करने लायक़ द्वीप हो तो बहुत ही उत्तम होगा। ऐसा न होकर यदि वह कोई भयंकर द्वीप होगा तो..." शिवदत्त अपनी बात पूरी किये बिना हंस कर रह गया। (और है)

पराया वैभव

दृढ़ व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल हमेशा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, मैं नहीं जानता कि आप किसके वास्ते यह सारी मेहनत उठा रहे हैं। लेकिन इस बात का पहले ही अनुमान लगाना बड़ा मुश्किल है कि आपने जो कार्य अपने हाथ में लिया, उसे पूरा करने के बाद उसके द्वारा आप का हित होगा या नुक़सान ? चाहे जो हो, आप के मार्ग दर्शन केलिए एक पिता-पुत्र की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने केलिए सुनिये।"

बेताल कहानी सुनाने लगा: नारायणपुर नामक गाँव में गोविंद नामक एक किसान रहा करता था। उसके यहाँ दस एकड़ बड़ी अच्छी उपजाऊ ज़मीन थी। उसके

बेताल कथाएं

मैं अपने बेटे को देखने की इच्छा रखता हूँ, इसलिए उसको एक बार गाँव भेज दे ।

रामानंद अपने पिता का संदेशा पाकर जवाब में यही कहला भेजता था-" आखिर उस गाँव में क्या रखा है ? मेरे पिताजी ही खुद यहाँ पर आकर अपने दिन आराम से बिता सकते हैं न ? "

आखिर अपने पुत्र के प्रति ममता के कारण गोविंद ने उसके यहाँ शहर में जाने का निश्चय किया और चलते वक्त यह समाचार महाजन हीरालाल को भी दिया। गोविंद अपना धन अकसर हीरालाल के यहाँ जमा कर देता था ।

गोविंद की यात्रा का समाचार सुन कर हीरालाल ने उसे समझाया-" सुनो भाई, शहर में जाने केलिए एक जंगली रास्ते के सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं है । उस रास्ते में चोर-लुटेरों का एक दल है । वे लोग तुम्हारा सारा धन लूट लेंगे । मेरे पास एक डिबिया है । उस का ढक्कन खोल दोगे तो डिबिया के अंदर से एक तरह की वायु निकलेगी जिस की वजह से तुम्हारे चारों तरफ़ के लोग बेहोश हो जायेंगे । मगर जिस के मुँह में हड़ होगा, उस पर इस वायु का कुछ असर न पड़ेगा । "

उस डिबिये का दाम एक सोने का सिक्का था । गोविंद ने उस डिबिये के साथ

रामानंद नामक इकलौता बेटा था जो गाँव के सभी लोगों से ज्यादा पढ़ाई के प्रति अभिरुचि रखता था । इस वजह से वह जब जवान बना, तब गाँव भर में सब से ज्यादा शिक्षित कहलाया ।

रामानंद खेतीबाड़ी में दिल नहीं लगाता था । पिता के मना करने पर भी वह राजधानी में पहुँचा । राज दरबार में नौकरी पाकर शादी भी कर ली ।

कई साल बीत गये, मगर रामानंद अपने पिता को देखने केलिए एक बार भी गाँव न लौटा । लेकिन गोविंद के जान-पहचान के लोग जब भी राजधानी में जाते, तब तब वह उन लोगों से कहला भेजता था कि

कुछ हड़ भी अपनी पोशाकों में छिपा रखा। जंगल के रास्ते में गोविंद की एक आदमी से मुलाक़ात हुई। जो क़ीमती वस्त्र पहने हुए था। उसके कंधे पर एक बड़ी गठरी लटक रही थी। वह रह-रह कर खांस पड़ता और पेड़ों की छाया में आराम करते अपनी यात्रा तै कर रहा था।

गोविंद ने उस की खांसी को कम करने के वास्ते उसे एक हड़ का फल दिया। आश्चर्य की बात थी कि कुछ ही क्षणों में उसकी खांसी ऐसे गायब हो गई, मानो मंत्र फूंक दिया गया हो।

इसके बाद दोनों साथ साथ चलने लगे। उनके सफ़र में तेज गति भी आ गई। नये मुसाफिर अपने मुंह में हड़ को रखे हुए था।

बातचीत के सिलसिले में मुसाफिर ने गोविंद से बताया कि उसका नाम रतनसेन है। वह शहर का सब से बड़ा अमीर था। जंगल के रास्ते सफ़र करना उसकी जिंदगी में यही पहली बार था। वह घोड़े पर सवार हो घर से चल निकला था। रास्ते में खांसी का दौर आया। इस पर वह घोड़े से उतर पड़ा, हांफते चलकर एक पेड़ की छाया में जा बैठा। इस बीच दूर पर कोई जंगली जानवर गरज उठा, जिससे घोड़ा भड़क कर भाग गया।

ऐसी मुसीबत के वक़्त गोविंद का साथ पाकर रतनसेन मन ही मन बड़ा खुश हुआ।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर चार चोरों ने अचानक उन्हें घेर लिया। पहले रतनसेन ने अपनी गठरी खोल दी। उसके अन्दर बहुत सारे क़ीमती हीरे थे। इसके बाद चोरों ने गोविंद का धन निकालने को कहा।

गोविंद ने हीरालाल से प्राप्त डिबिया खोल कर दिखाते हुए कहा–" मेरे पास भी थोड़े से हीरे हैं।"

दूसरे पल में ही चारों चोर बेहोश हो नीचे गिर पड़े। इस प्रकार खतरे से बच कर वे दोनों शहर में पहुंचे।

रतनसेन ने गोविंद के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और उससे अनुरोध किया—"सुनो भाई, तुम्हें थोड़े दिन मेरे घर पर बिताना होगा।"

वैसे गोविंद के मन में जल्दी जाकर अपने पुत्र को देखने की इच्छा थी, मगर वह रतनसेन के अनुरोध को इनकार न कर पाया।

रतनसेन के घर गोविंद का बड़ा आदर-सत्कार हुआ। दो नौकर सदा उसके साथ लगे रह कर उसकी हर जरूरत पूरा करते थे, खाने के लिए मिष्टान्न भोजन, मिल जाता, सोने केलिए मुलायम गद्दे, साथ ही उसके मनोरंजन के वास्ते तरह-तरह के नाच-गानों का इंतजाम किया जाता था।

तीन दिन आराम से कट गये। चौथे दिन गोविंद ने रतनसेन के सामने अपने पुत्र के घर जाने की इच्छा प्रकट की। इस पर रतनसेन बड़ा दुखी हुआ और बोला—"तुम्हें यहाँ पर किस बात की कमी है? मैं तुम्हारे बेटे के पास खबर भिजवा कर उसे भी यहीं पर बुलवा लेता हूँ। तुम जब तक यहाँ रहोगे, तब तक वह भी तुम्हारे साथ रहेगा।"

मगर गोविंद ने इसे न माना। आखिर रतनसेन ने सुझाया—"तुम एक दिन अपने पुत्र के घर बिता दो, अगर वहाँ पर तुम्हारा दिल लग गया तो वहीं रह जाओ, वरना सीधे मेरे घर चले आओ। मैं तुम पर जोर-दबाव डालना नहीं चाहता। मगर मैं तुम्हें लिवा लाने केलिए तुम्हारे पुत्र के घर न आऊँगा, एक काम करो, मेरे पास खबर भिजवा दो, मैं तुम्हें अपने घर बुला लाने के लिए रत्नजड़ित पालकी तुम्हारे बेटे के घर भिजवा दूंगा।"

गोविंद ने रतनसेन की बात मान ली और वह खुशी-खुशी अपने पुत्र के घर पहुँचा। रत्नजड़ित पालकी में अपने घर आये हुए पिता को देख रामानंद एक दम चकित रह गया। गोविंद ने अपने पुत्र को सारा

समाचार सुनाया। गोविंद ने अपने बेटे की हालत देखी। घर के छोटे-बड़े काम संभालने के लिए नौकर-चाकर हैं, राज दरबार में कोई काम संपन्न करने के लिए उसके घर आये हुए लोग हाथ बांधे विनय पूर्वक रामानंद से बातचीत कर रहे थे। इस बात का गोविंद को आनंद हुआ कि उसका बेटा एक तरह से वैभव की जिंदगी बिता रहा है।

बड़ी स्वेच्छा के साथ गोविंद उस घर में व्यवहार करने लगा। बेटे और बहू के साथ दिल खोलकर बातें कीं और जो धन अपने साथ लाया, उसे उन्हें सौंप दिया।

दूसरे दिन रामानंद ने अपने पिता से कहा–"पिताजी, आप ने एक दिन मेरे घर पर बिताया, अब क्या सेठ रतनसेन को ख़बर भिजवाकर रत्न जड़ित पालकी मंगवालेंगे?"

इस पर मुस्कुरा कर गोविंद ने कहा–"पगले, सब लोगों को अपने गांव और अपने ही घर में, जहाँ पैदा होकर पलते हैं, वहाँ पर जो आनंद मिलता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। मेरे द्वारा रतनसेन को लाखों रुपयों का फ़ायदा हुआ। इसी वजह से उन्होंने मेरा बड़ा आदर-सत्कार किया। जो वैभव अपना नहीं, वह किसी को भी स्थाई आनंद नहीं दे सकता।"

इसके बाद एक हफ़्ता बीत गया। आठवें दिन रामानंद ने अपने पिता से कहा–"पिताजी, मैंने राज दरबार की नौकरी को इस्तीफ़ा दे दिया है। चलिये, हम अपने

गाँव चले जायेंगे।" अपने बेटे के इस निर्णय पर गोविंद बड़ा खुश हुआ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, क्या रामानंद का यह निर्णय आपको कुछ अनुचित मालूम नहीं होगा? उसने बड़े, ही प्रयास के साथ साध्य होने वाली नौकरी राज दरबार में प्राप्त की। इस कारण उसने धन-संपत्ति के साथ जनता का आदर भी प्राप्त कर लिया। ऐसी हालत में उस नौकरी को लात मारकर अपने गाँव को लौटने का निर्णय करना क्या पागलपन न होगा? इस संदेह का समाधान जानकर भी न देंगे तो आपका सर फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया—"रामानंद का निर्णय किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाय, अनुचित नहीं है। पागलपन तो बिलकुल नहीं कहा जा सकता। उसके पिता ने अपने द्वारा लाखों रुपये का फ़ायदा उठाने वाले सेठ रतनलाल ने उसे जो वैभव व संपत्ति देनी चाही, उसे उसने लात मार दी। इसका कारण वह वैभव व संपत्ति उसकी अपनी नहीं है। यही बात गोविंद ने संकेत के रूप में अपने बेटे को बताई। उसके भीतर छिपे सत्य को रामानंद ने भांप लिया। वास्तव में रामानंद राज कर्मचारी के रूप में जिस वैभव की ज़िंदगी बिता रहा है, वह उसकी अपनी नहीं है। राजा अगर किसी कारण से उस पर अप्रसन्न हो जाय तो रामानंद को उस नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। आज तक उसे जनता के द्वारा जो कुछ आदर व प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है, उससे भी वह वंचित हो जाएगा। ये ही सारी बातों पर विचार करके रामानंद इस निर्णय पर पहुँचा कि अपने गाँव में लौटने पर खेतीबाड़ी करते हुए किसी प्रकार के उतार-चढ़ाव के बिना अपनी ज़िंदगी को सुखपूर्वक बिता सकता है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
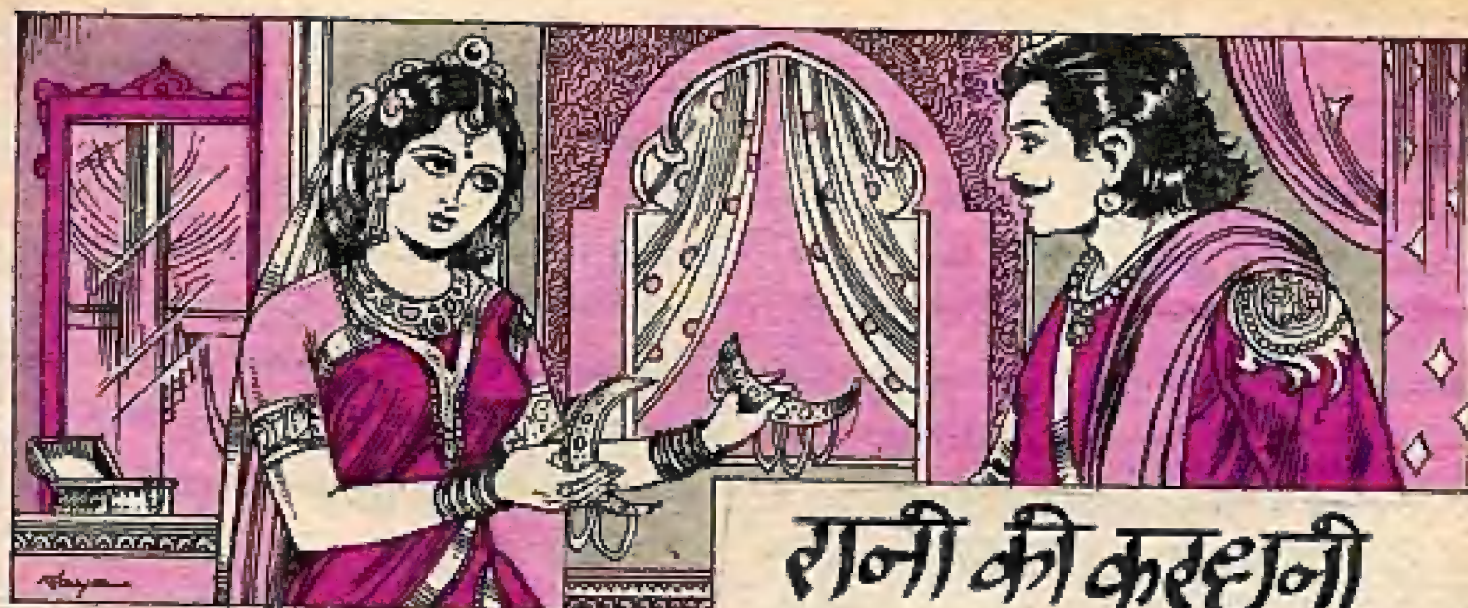
रानी की करधनी

अमरेन्द्रपुर के राजा जयकांत की पत्नी विमला देवी के पास एक रत्न खचित सोने की करधनी थी। वह कई साल पहले बनवाई गई थी। इसलिए जब एक दिन रानी पहनने लगी, तब वह टूट गई।

रानी उस करधनी को अपने प्राणों से अधिक मानती थी। इसलिए उस करधनी के टूटने पर रानी को बड़ा दुख हुआ। यह समाचार राजा को सुना कर रानी ने उनसे प्रार्थना की कि किसी कुशल स्वर्णकार के द्वारा उसकी मरम्मत करवाई जाय।

राजा ने यह काम मंत्री को सौंप दिया। यह खबर मिलते ही कई स्वर्णकार मंत्री के पास पहुँचे और निवेदन किया कि रानी की करधनी की मरम्मत करने का मौक़ा उन्हें दे। मंत्री के दरियाफ़्त करने पर उन्हें पता चला कि ऐसे आभूषण तैयार करने में फणिभूषण नामक स्वर्णकार बड़ा ही कुशल है। मंत्री ने करधनी उसके हाथ सौंपकर एक हफ़्ते के अन्दर मरम्मत का काम पूरा करने का आदेश दिया।

कई सालों से सांबशिव नामक एक स्वर्णकार रानी के आभूषण बनाया करता था। इस बार यह आदर फणिभूषण को मिल गया। इस पर वह ईर्ष्या से भर उठा। रानी ने इसके पहले मंत्री से शिकायत की थी कि सांबशिव जो गहने गढ़ता है, उसकी कारीगरी अच्छी नहीं होती। इसीलिए इस बार मंत्री ने इस संबंध में उसकी सलाह तक लिये बिना यह काम फणिभूषण को सौंप दिया था। फणिभूषण ने दो हफ़्ते के अन्दर करधनी तैयार करके मंत्री के हाथ सौंप दिया। उसने मंत्री से देरी के लिए माफ़ी मांगते हुए निवेदन किया कि इधर एक हफ़्ते केलिए उसकी तबीयत बिगड़ गई थी, इस वजह से करधनी की मरम्मत करने

योगेश प्रसाद

में एक हफ़्ता और ज्यादा लगा है। रानी विमला देवी फणिभूषण की कारीगरी और कुशलता पर मुग्ध हो गई। क्योंकि फणिभूषण ने उस पुरानी करधनी को नई करधनी जैसे सुंदर बनाया था। रानी ने फणिभूषण को एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार में दीं और साथ ही उसकी कारीगरी की बड़ी तारीफ़ की।

इस पर सांबशिव की ईर्ष्या और भड़क उठी। उसने एक दिन राजा से शिकायत की–"मुझे अभी अभी पता चला कि फणिभूषण ने महारानी की करधनी को एक हफ़्ते में बना कर देने के बजाय, दो हफ़्ते में बना कर दिया है। एक हफ़्ते तक उसकी पत्नी महारानी की वह करधनी पहनती रही। क्या महारानी के आभूषणों को इस तरह एक साधारण औरत का धारण करना अक्षम्य अपराध नहीं है?"

सांबशिव की बातें सुनकर राजा ने मंत्री को बुलवा कर इसकी सचाई दरियाफ़्त करने का आदेश दिया।

मंत्री ने दूसरे दिन राजा के दर्शन कर निवेदन किया–"महाराज, मैं निस्संदेह बता सकता हूँ कि स्वर्णकार फणिभूषण और उसकी पत्नी दोनों निर्दोष हैं। ईर्ष्या से भर कर सांबशिव ने फणिभूषण पर जो दोषारोप किया, इस वास्ते उसे सौ कोड़े लगाने की सजा दीजिए।"

राजा ने मंत्री से पूछा–"आप फणिभूषण को निर्दोष कैसे साबित कर सकते हैं?"

मंत्री ने एक सिपाही को बुलाकर आदेश दिया कि उसी वक्त फणिभूषण और उसकी पत्नी को राजा के सामने हाज़िर करें। घंटे भर बाद राजा के सामने हाज़िर हुई फणिभूषण की पत्नी को देख रानी विमलादेवी के साथ उनकी दासियाँ भी मुस्कुरा उठीं।

दर असल फणिभूषण की पत्नी की कमर रानी की कमर से दुगुनी चौड़ी थी। इसलिए फणिभूषण पर झूठा दोषारोप करने के अपराध में राजा ने उसी वक़्त सांबशिव को सौ कोड़े लगाने की सजा सुना दी।
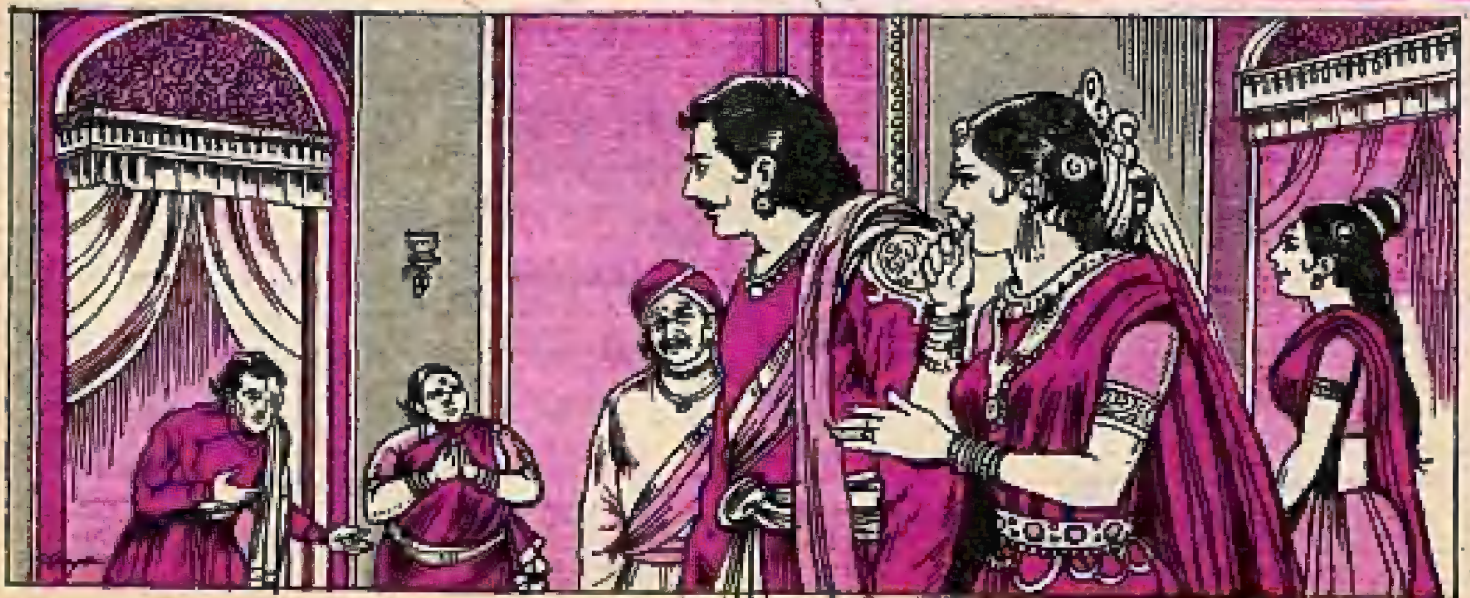
न्याय की घंटी

पुराने जमाने में चंपक देश पर राजा शूरसिंह राज्य करते थे। न्याय का निर्णय करने में वे अपना सानी नहीं रखते थे। उन्होंने राज महल के सामने न्याय की एक घंटी लटकवा दी। जनता में अगर किसी के साथ कोई अन्याय हुआ, और वे राजा से शिकायत करना चाहे तो, राजमहल के पास जाकर घंटी बजा सकते थे।

शूरसिंह के गुरु हिमालयों में तपस्या करने गये और बीस साल बाद राजधानी को लौट आये। राजा ने उनका स्वागत किया और उन्हें अपने शासन के बारे में पूरी जानकारी दे रहे थे। उस वक्त राजमहल का पर्यवेक्षक वहाँ पर आ पहुँचा और बोला—"प्रभू! न्याय की घंठी बिलकुल घिस गई है। इस वजह से घंटे की ध्वनि साफ़ सुनाई नहीं दे रही है। इसलिए उसकी जगह नई घंटी लटकवा देना उचित होगा!"

राजा ने आश्चर्य में आकर पूछा—"हमने थोड़े ही दिन पहले न्याय की नयी घंटी बंधवाई थी न? क्या इतनी जल्दी वह घिस गई है?"

"जी हाँ, महाराज! लगता है कि हमारे देश में ऐसा कोई नागरिक नहीं दीखता जो इस घंटी का प्रयोग न करता हो!" महल के पर्यवेक्षक ने कहा।

"तब तो इस बार कुछ ख़ास किस्म के लोहे से बड़ी घंटी तैयार करवा दो।" राजा ने आदेश दिया। राजा के मुँह से ये बातें सुनकर राज गुरु हँस कर बोले—"राजन, इस वक्त एक और न्याय का घंटा नहीं, जनता को न्याय चाहिए। देश में कितने कारागार और अस्पताल हैं, इसका हिसाब हमें नहीं चाहिए, हमारे लिए यह बात खास महत्व रखती है कि जनता इनसे दूर रहकर कहाँ तक सुखी है?" राजगुरु के सुझाव से राजा शूरसेन को अपने शासन की त्रुटियों का पता चला।

काजी की युक्ति

एक नवाब के यहाँ एक वज़ीर था। उसने एक दिन बड़ी खूबसूरत गुलाम औरत को खरीदा। यह खबर नवाब के कानों तक पहुँची। उस औरत को खुद देखने के ख्याल से नवाब ने वज़ीर के पास अपने नौकर के जरिये खबर भिजवा दी–"आज रात को मैं तुम्हारे घर खाने के लिए आ रहा हूँ।"

वज़ीर ने नवाब के वास्ते भारी पैमाने पर खाने-पीने की चीजों का इंतज़ाम किया। नवाब के पास शराब वगैरह पहुँचाने केलिए वज़ीर ने अपनी नई गुलाम औरत को तैनात किया। दोनों खाना खाने के बाद शराब पीते हुए बातचीत करने लगे।

बातचीत के सिलसिले में अचानक नवाब बोले–"वज़ीर, तुम इस गुलाम औरत को मेरे हाथ बेच दो। तुमने जो दाम देकर इसको खरीदा है, उसके दुगुना दाम मैं तुम्हें दूँगा। अगर तुम ज्यादा दाम चाहोगे तो भी मैं देने को तैयार हूँ।"

"हुजूर माफ़ करें, मैं इस गुलाम को बेचना नहीं चाहता।" वज़ीर बड़ी अदब के साथ बोला।

इस पर नवाब बोले–"तब तो तुम इसे मुझे भेंट कर दो।"

"मैं भेंट भी देना नहीं चाहता।" वज़ीर ने साफ़ कह दिया।

वज़ीर का यह रवैया देख नवाब को बड़ा गुस्सा आ गया। तब वे बोले–"सुनो, अगर तुम इस गुलाम औरत को मुझे भेंट न दोगे या बेचोगे नहीं तो मैं खुदा की क़सम लेकर कहता हूँ कि मैं अपनी बीबी को तलाक दूँगा।"

"हुजूर, गुस्ताखी मुआफ़ हो, मैं अपनी बीबी और बच्चों को छोड़ सकता हूँ, मगर इस गुलाम औरत को आप के

हाथ न बेचूंगा और न मैं इसे आपको भेंट ही करूँगा। वरना मैं अल्लाह के साथ दगा करने वाला साबित हो जाऊँगा।" वज़ीर ने हट पूर्वक कहा।

दोनों ने जोश में आकर बड़ी-बड़ी क़समें लीं, लेकिन इसके बाद उन्हें पछतावा होने लगा।

"अब क्या किया जाय, अब दोनों को क़समों से बचकर अपनी-अपनी इज्जत बचाने का उपाय क्या है?" नवाब ने पूछा।

"सिर्फ़ काजी अकेले ही इसका उपाय बता सकते हैं। अगर सरकार का हुक्म हो तो मैं एक सिपाही के द्वारा उन्हें बुला लाने की खबर भेज दूंगा।" वज़ीर ने जवाब दिया।

नवाब ने मान लिया। इस पर वज़ीर ने काजी को बुलवा भेजा। काजी ने सारी बातें सुनकर अपनी सलाह दी– "यह तो कोई बड़ी समस्या नहीं है। वज़ीर साहब नवाब साहब को आधी गुलाम औरत को बेचकर बाकी आधा भेंट कर दें तो यह पहेली बड़ी आसानी से सुलझ जाएगी।"

नवाब साहब काजी की युक्ति पर खुश होकर बोले–"शबाश! एक और सलाह भी दीजिए। इस औरत को गुलामी की

हालत से छुड़ाने के बाद ही मैं इसे अपने जनाने में शामिल कर सकता हूँ। क़ानूनन इसकी गुलामी को दूर करने केलिए बहुत सारी रस्में अदा करनी हैं। इसके वास्ते भी कोई आसान तरीक़ा हो तो सोच लीजिए।"

"इसके वास्ते एक ही आसान तरीक़ा है। किसी के साथ अभी इस गुलाम औरत की शादी कर दे तो यह अपनी गुलामी के बंधन से छूट जाएगी। दूसरे ही पल में उस आदमी के द्वारा इस औरत को तलाक़ दिलवा कर हुजूर इसको अपने जनाने में शामिल कर सकते हैं।" काजी ने उपाय बताया।

"अच्छी बात है। एक सिपाही को बुलवा दो।" नवाब ने वज़ीर को हुक्म दिया।

वजीर ने अपने एक सिपाही को बुलवा भेजा। उस सिपाही के साथ काजी ने गुलाम औरत की शादी की, तब बोले–"अब यह औरत गुलाम नहीं, स्वतंत्र है। अब मैं इस सिपाही के द्वारा तलाक़ दिलवाता हूँ।"

लेकिन सिपाही ने तलाक़ देने से इनकार करते हुए कहा–"मेरी औरत बड़ी खूबसूरत है। मैं उसे तलाक़ देना नहीं चाहता।" इस पर नवाब और वज़ीर ने उसे धमकाया, डराया, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा।

इस पर नवाब गुस्से में आकर काजी से बोले–"दुष्ट, तुम्हारी यही युक्ति है? अगर तुमने इस उलझन को सुलझाया नहीं तो तुम्हारा सर कटवा कर क़िले के द्वार पर लटकवा दूंगा।"

"हुजूर जल्दबाजी कर रहे हैं। इस उलझन को सुलझाना कोई बड़ी बात नहीं है। अगर वज़ीर साहब इस सिपाही को मुझे, गुलाम के रूप में दे दे तो सारी उलझनें सुलझ जायेंगी।" काजी ने युक्ति बताई।

"अच्छी बात है, दे दिया, लीजिए।" वज़ीर ने कहा। इसके बाद काजी ने गुलाम औरत की ओर मुड़ कर कहा–"यह सिपाही मेरा गुलाम है। मैं इसको तुम्हें गुलाम के रूप में देता हूँ, ले लोगी?"

"हाँ, जरूर लूँगी।" औरत ने झट जवाब दिया।

"अब क़ानून के मुताबिक़ तुम्हारा गुलाम तुम्हारा पति नहीं हो सकता। इसलिए तुम लोगों की शादी अपने आप रद्द हो गई। मैं जिस काम केलिए आया था, वह पूरा हुआ।" ये शब्द कहते काजी उठ खड़े हुए।

नवाब ने काजी को रोक कर कहा–"काजी साहब, आपने हमें न्याय बता कर सलाह दी, इस वास्ते यह भेंट लीजिए।" यों कहते एक थैली भर सोने की अशर्फ़ियाँ काजी के हाथ सौंप दी।

पंच कल्याणी

ब्रह्मदत्त काशी पर राज्य करते थे। उन दिनों में बोधिसत्व ने एक उत्तम नस्ल के घोड़े के रूप में जन्म लिया। वह राजा के घोड़ों में उत्तम घोड़ा कहलाया और पंच कल्याणी माना जाता था। इस कारण उसका पोषण और अलंकार विशेष रूप से राज परिवार संप्रदाय के अनुरूप किया जाता था।

उस घोड़े केलिए तीन साल पूर्व के बढ़िया व पुराने धान के साथ बनाया गया खाना खिलाया जाता था। उसका खाना एक हज़ार स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य के थाल में परोसा जाता था। वह जिस घुड़साल में बंधा रहता था, वह हमेशा सुगंधित द्रव्यों से महकता रहता। उस घुड़ साल के चारों तरफ़ सुंदर पर्दे लटकते रहते थे। ऊपर की चांदनी सोने के फूलों से सजी रहती थी। चारों तरफ की दीवारें खुशबूदार फूलों से सुशोभित रहतीं, दिन-रात वह घुड़साल अगर बत्तियों तथा सुगंधित द्रव्यों के परिमल से देदीप्यमान दिखाई देता था।

ऐसे उत्तम अश्ववाले राजा के वैभव को देख अड़ोस-पड़ोस के सारे सामंत राजा ईर्ष्या करते थे। एक बार इकट्ठे सात सामंत राजाओं ने काशी राजा के पास एक दूत के द्वारा यों संदेशा भेजा— "आप बिना देरी किये तुरंत अपना राज्य हमें सौंप दीजिए, वरना हमारे साथ युद्ध केलिए तैयार हो जाइये।"

इस पर काशी राजा ने अपने मंत्रियों को बुलवा कर सामंत राजाओं का संदेशा उन्हें सुनाया। मंत्रियों ने सोच-समझ कर राजा को समझाया—"महाराज, आप को युद्ध क्षेत्र में स्वयं जाने की कोई जरूरत नहीं है। हमारे सेनापति वीरवर्मा को भेज

पराजित कर कुशल पूर्वक लौट सकता हूँ।" सेनापति का जवाब सुनकर राजा खुश हुए और पंच कल्याणी को उनके हाथ सौंपकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने भेजा।

राजा से विदा लेकर पंच कल्याणी को साथ ले सेनापति वीरवर्मा बड़े उत्साह के साथ उसी वक़्त युद्ध भूमि की ओर चल पड़ा।

इस के बाद वीरवर्मा क़िले से बिजली की भांति निकल पड़ा। हिम्मत के साथ लड़ कर प्रथम सामंत को बुरी तरह से हराया और उसे बन्दी बनाया। फिर युद्ध क्षेत्र में जाकर दूसरे सामंत को बन्दी बनाया। इस तरह एक-एक करके पांच सामंतों को क्रमशः बन्दी बनाया।

छठे सामंत के साथ युद्ध करके उस को भी हराया, लेकिन इस बीच घोड़ा बुरी तरह से घायल हो गया और उसके घावों से खून बहने लगा।

वीरवर्मा ने सोचा कि पंच कल्याणी को एक द्वार के पास बांध कर दूसरे घोड़े को लेकर युद्ध क्षेत्र में चला जाय। इस ख्याल से वीरवर्मा पंच कल्याणी के निकट पहुंचा और उसकी लगाम, जीन वगैरह खोलने को हुआ।

उस वक़्त पंच कल्याणी के रूप में स्थित बोधिसत्व ने आंखें खोल कर देखा। वह

दीजिए, वही दुश्मन को पराजित कर शीघ्र लौट आयेंगे। अगर वे दुश्मन को हरा नहीं सकेंगे तो फिर आगे की बात सोची जाएगी।"

इस पर राजा ने सेनापति को बुलवा कर कहा—"वीरवर्मा, हम पर एक भारी विपत्ति आ पड़ी है। एक साथ सात सामंत राजा हमारे देश पर हमला करने जा रहे हैं। क्या आप उन सातों को पराजित कर सकते हैं?"

इसके उत्तर में वीरवर्मा ने कहा—"महाराज, यदि आप अपने प्यारे घोड़े पंच कल्याणी को मेरे हाथ सौंप दे तो उन सातों सामंतों को क्या, सारे देशों को

मन ही मन यह सोचकर दुखी होने लगा—"हे बीर. तुम भी कैसे भोले हो ? मुझे घायल देख एक और घोड़े को दुश्मन से लड़ने के लिए तैयार कर रहे हो। सातवें व्यूह को भेदकर सातवें सामंत राजा को बन्दी बनाना बेचारा वह क्या जाने ? उस पर विश्वास करके लड़ाई के मैदान में ले जाओगे तो अब तक मैंने जो विजय प्राप्त की, वह सब बेकार जाएगी। तुम अकारण ही दुश्मन के हाथों में मर जाओगे। हमारे मालिक काशी के राजा बड़ी आसानी से सामंत राजाओं के हाथों में फंस जायेंगे। तुम यह समझ न पाये कि सातवें सामंत राजा को हराना सिर्फ़ मेरे लिए ही संभव है, कोई दूसरा घोड़ा उसको किसी भी हालत में जीत नहीं सकता!"

यों विचार कर वह चुप नहीं रहा। घायल होकर पड़ा हुआ वह पंच कल्याणी बीरवर्मा को अपने निकट बुला कर बोला—"हे बीर-शूर बीरवर्मा, यह अच्छी तरह से समझ लो कि सातवें व्यूह को भेदकर सातवें शत्रु सामंत राजा को पकड़ सकने वाला घोड़ा मुझे छोड़ कर दूसरा कोई नहीं है। अब तक मैंने जो श्रम किया है उसे व्यर्थ मत जाने दो। हर हालत में तुम्हें हिम्मत और पराक्रम को नहीं खोना है। इसके साथ आत्म-विश्वास और सहनशीलता की ज़रूरत होती है। इसलिए तुम मुझ पर पूर्ण रूप से विश्वास रखो। घायल
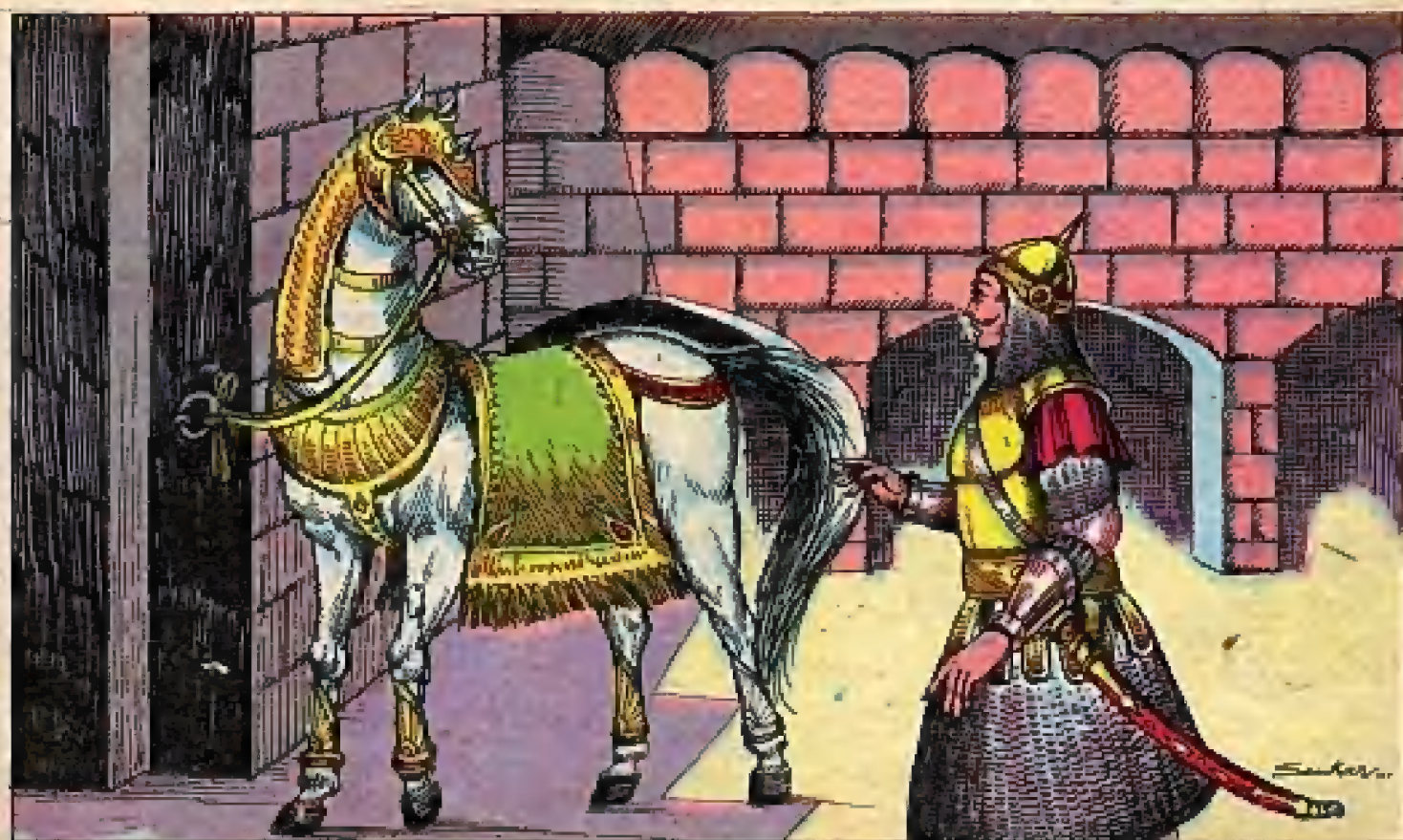
होने मात्र से मुझे कमजोर मत समझो ; मेरी बात सुनकर मत त्यागो । मेरे घाव पर तुरंत मरहम पट्टी करके उसे चंगा कर दो । फिर से मुझे लड़ाई के मैदान में ले जाओ ।" यों अनेक प्रकार से पंच कल्याणी ने वीरवर्मा को समझाया ।

वीरवर्मा ने पल भर भी विलंब किये विना पंच कल्याणी की मरहम पट्टी करवा दी । उसके चंगे होने पर ज्यों ही वह उस पर सवार हुआ, त्यों ही वह बिजली की गति से निकल गया और सातवें व्यूह को भेद डाला । इस पर वीरवर्मा ने सातवें सामंत को भी बन्दी बनाया ।

इस तरह युद्ध में वीरवर्मा की विजय हुई । बन्दी बने सातों सामंत राजाओं को वीरवर्मा के सैनिकों ने काशी राजा के सामने हाजिर किया । उस समय पंच कल्याणी के रूप में स्थित बोधिसत्व वहाँ आ पहुँचे । वे राजा से बोले–" राजन, ये सातों सामंत राजा आपके ही समान राजा हैं । इनको सताना आप को शोभा नहीं देता । इनका अपमान करना भी उचित नहीं है । आप अपनी इच्छा के मुताबिक किसी शर्त को उनसे पूरा करा कर छोड़ देना न्याय संगत होगा । आप अपने दुश्मन के प्रति भी उदार बने रहिए । धर्म का पक्ष लेकर न्यायपूर्वक शासन कीजिए ।" यों राजा को पंच कल्याणी ने उपदेश दिया । उसी वक़्त सिपाहियों ने आकर घोड़े को सजावट वाली सारी चीज़ें हटा दीं । उसी समय पंच कल्याणी के रूप में स्थित बोधिसत्व पंच भूतों में मिल गये ।

इस पर काशी राजा के ब्रह्मदत्त के आदेशानुसार राज सम्मान के साथ पंच कल्याणी घोड़े की अंत्येष्टि क्रिया संपन्न की गई । इसके बाद सेनापति वीरवर्मा का बड़े पैमाने पर अभिनंदन हुआ । सातों सामंत राजाओं को उनके राज्यों में वापस भेजा गया । उस दिन से बोधिसत्व के सुझाव के अनुसार काशी राज्य में न्याय पूर्वक शासन होने लगा ।
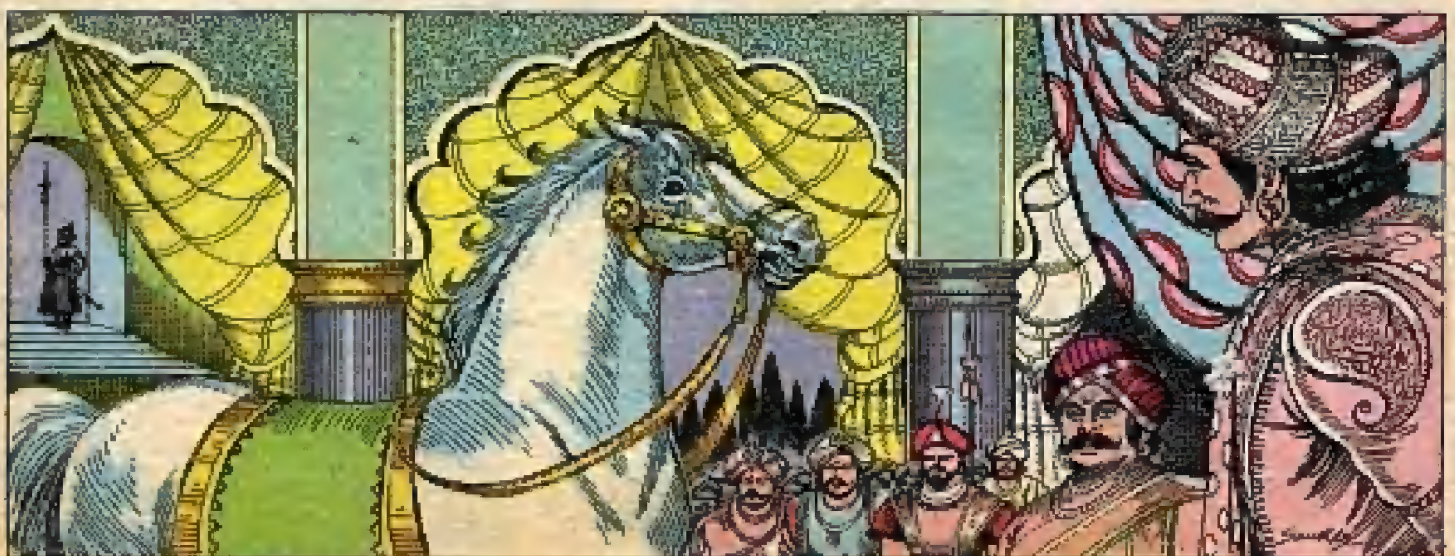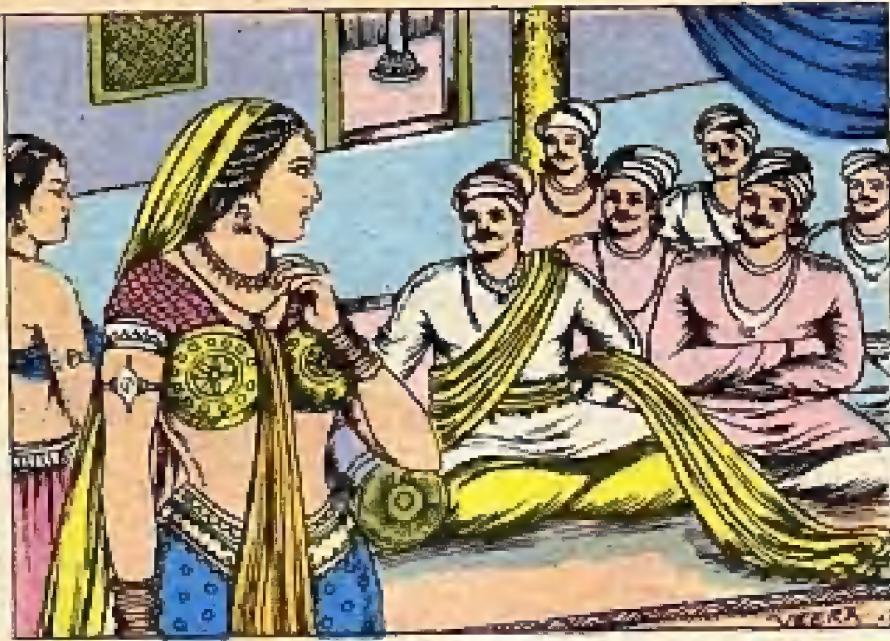
चित्तौड़ की रानी पद्मावती–२

अल्लाउद्दीन के द्रोह को देख प्रत्येक राजपूत क्रोध से भर उठे। पर पद्मावती आवेश में नहीं आई। उन्होंने सेनापतियों और अपने चाचा गोरा तथा वीर बादल को बुलवा भेजा। उनके सामने अपनी एक योजना रखी। सबने उस योजना को मान लिया।

एक राजपूत नेता अल्लाउद्दीन के पास दूत बन कर गये। उन्होंने अल्लाउद्दीन को बताया कि पद्मावती उसके खेमे में आने के लिए तैयार हैं। पर उनकी शर्त यह है कि वे राज सम्मान के साथ हीं आयेंगी। पालकियों में अपनी सखियों के साथ आने की उन्हें अनुमति मिलनी चाहिए।
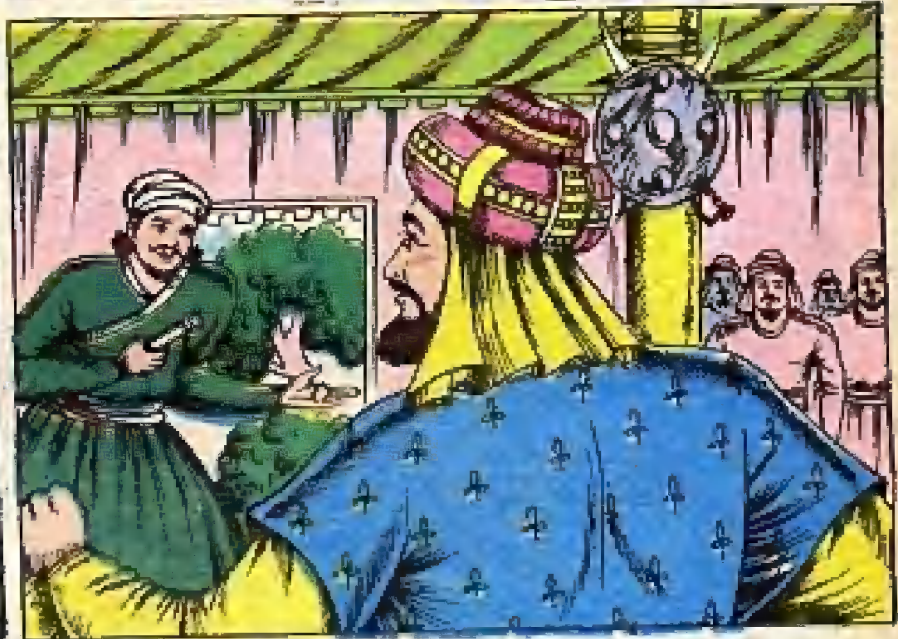
अल्लाउद्दीन ने उन शर्तों को खुशी के साथ मान लिया। शाम के समय चित्तौड़ दुर्ग से सात सौ पालकियाँ सुलतान के खेमों की ओर निकल पड़ीं। सुलतान तथा उसका परिवार तन्मय होकर उन पालकियों की ओर ताकते रह गये।

सब से आगेवाली पालकी में से एक युवती उतर पड़ी । सुलतान से निवेदन किया कि वह पद्मावती की प्रमुख सखी है । महारानी अंतिम बार अपने पति से विदा लेना चाहती हैं, इसलिए उनसे मिलने की अनुमति दिलावें । इस पर सुलतान ने अनुमति दे दी ।

महान वीर गोरा ने रानी पद्मावती का वेष धारण किया था । ज्यों ही राजा रतनसिंह उनके समीप में आये, त्यों ही गोरा ने अपना नक़ाब हटाया । पालकियों में बैठे हुए लोगों को इशारा किया । उस संकेत को सब लोग समझ गये ।
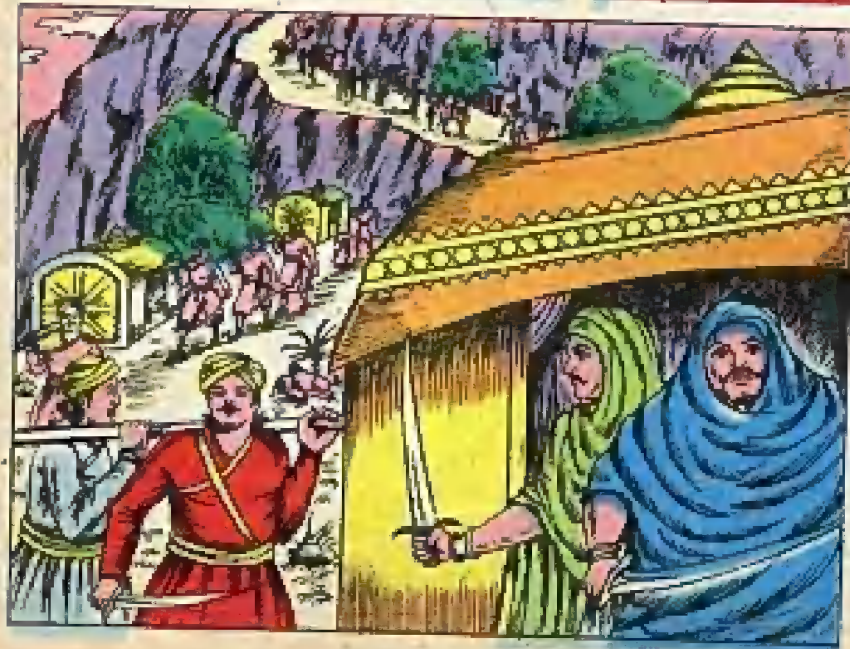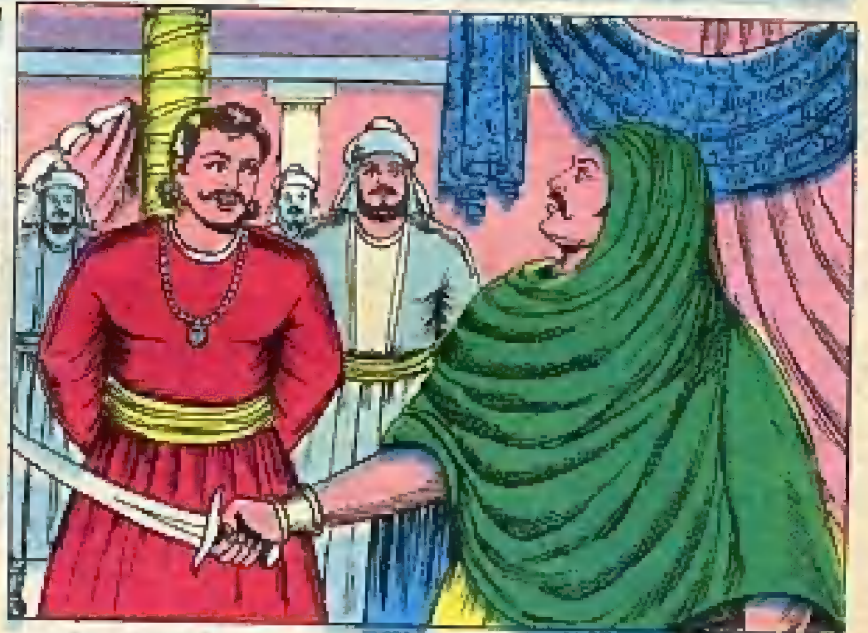
सात सौ पालकियों में चौदह सौ राजपूत सैनिक नारी के वेष धरकर बैठे थे । प्रत्येक पालकी को सैनिक पोशाकों में ढोकर लाये हुए आठ-आठ लोग भी दर असल सैनिक थे । उन लोगों ने अपने हथियार पालकियों में छिपा रखे थे । गोरा का संकेत पाकर सबने तक्षण हथियारों को अपने हाथों में लिया ।

इसे देख सुलतान तथा उसके सैनिक चकित रह गये। राणा रत्नसिंह थोड़े राजपूतों के साथ चित्तौड़ गढ़ में भाग गये। राजपूत सैनिकों ने सुलतान के खेमों पर हमला करके बीभत्स बनाया। कई शत्रु सैनिकों का वध किया, मगर जिन लोगों ने शरण माँगी, उन सैनिकों को प्राणों के साथ छोड़ दिया।

बचे-खुचे सैनिकों को साथ लेकर सुलतान वहाँ से भाग गया। उस दिन रात को चित्तौड़ दुर्ग में राजपूतों ने विजयोत्सव मनाया। उन लोगों की ख़ुशी का कोई पारावार न था।
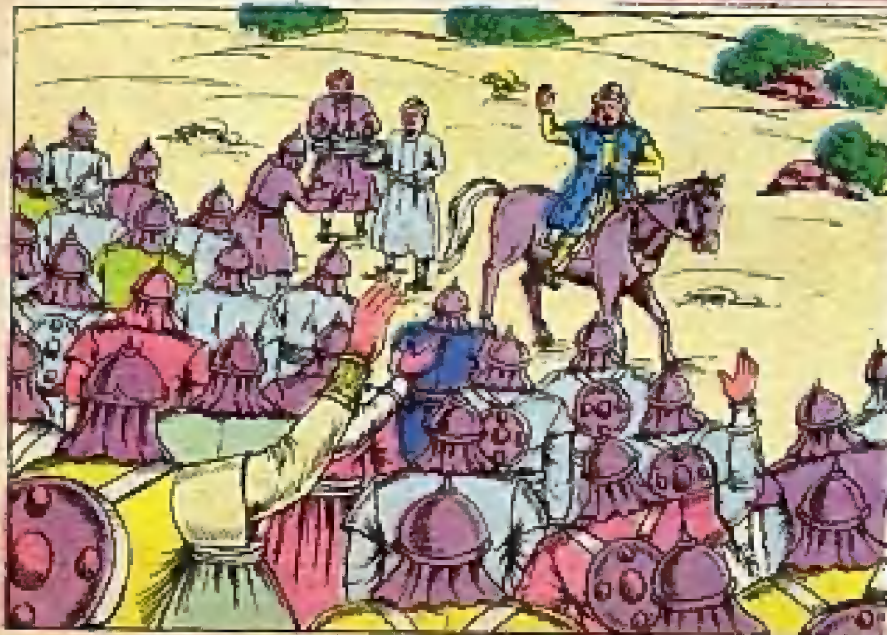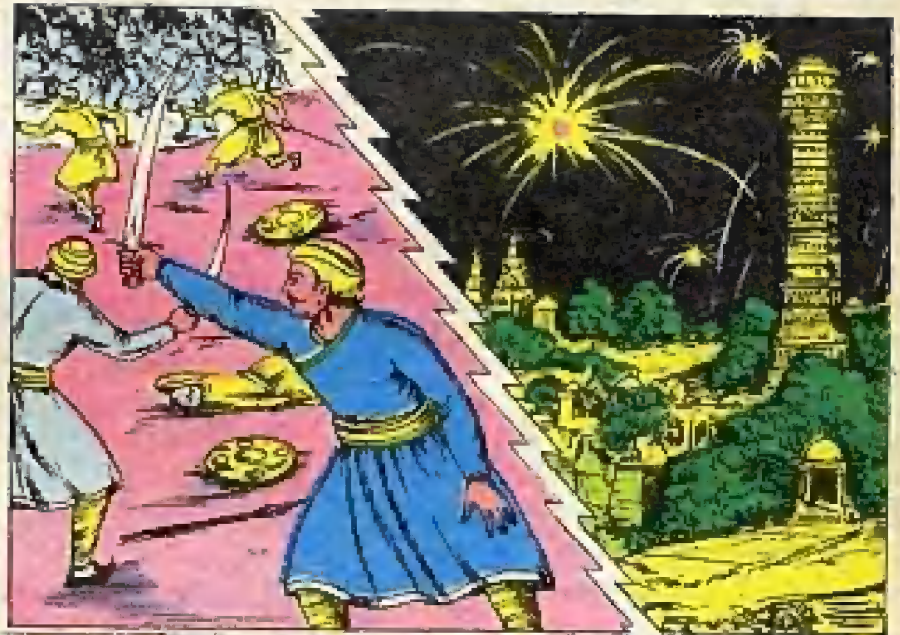
अल्लाउद्दीन का इस प्रकार जो अपमान हुआ, उसकी बुरी तरह से जो हार हुई, इन कारणों से उसके दिल में राजपूतों के प्रति असहनीय द्वेष पैदा हुआ। उसने गुजरात को लूटकर जो धन इकट्ठा किया था, उसे लगाकर भारी सेना इकट्ठी की। मोटी तनख्वाह का लोभ दिखा कर अत्यंत समर्थ व्यक्तियों को अपने सैनिक दलों के सरदार नियुक्त किये।

इस प्रकार दो सालों के अन्दर अल्लाउद्दीन ने भारी सेना इकट्ठी की, फिर एक बार चित्तौड़ के दुर्ग पर हमला बोल दिया । इस बीच अल्लाउद्दीन के सैनिकों को बढ़िया हथियार प्राप्त हुए और साथ ही उन्हें क्रूर स्वभाव वाले सरदारों का नेतृत्व भी मिला ।
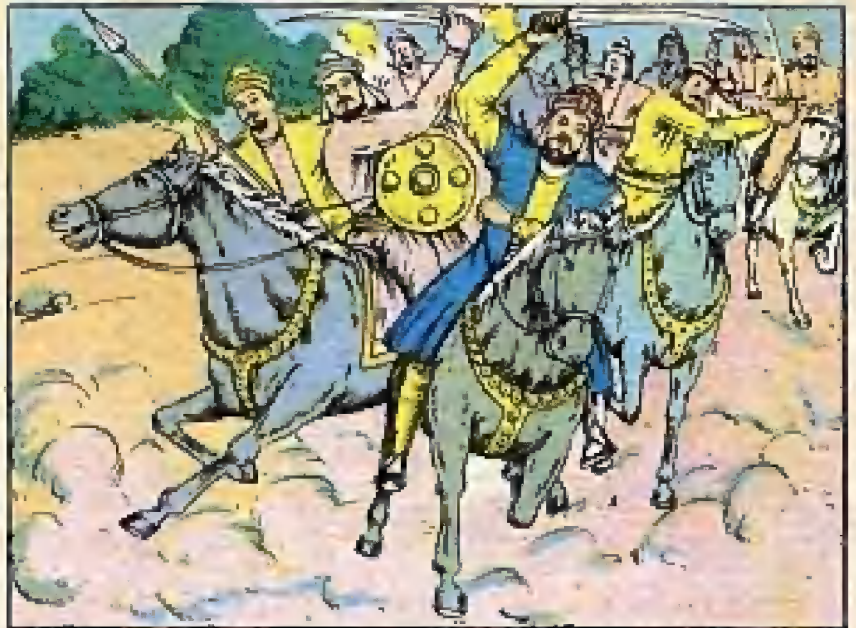
फिर भी राजपूतों ने बड़ी हिम्मत के साथ अल्लाउद्दीन की सेना का सामना किया । गोरा और बादल ने दुर्ग के प्रधान द्वारों के पास शत्रु सैनिकों के साथ पराक्रम पूर्वक युद्ध किया और लड़ते-लड़ते वीर स्वर्ग को प्राप्त हुए । इसी तरह दुर्ग के भीतर के सैनिक और राज परिवार का प्रत्येक पुरुष साहस पूर्वक लड़ते काम आये ।

दुश्मन की जीत की खबर के मिलते ही रानी पद्मावती ने अग्नि प्रवेश किया । उनके साथ दुर्ग में रहनेवाली सभी नारियों ने जौहर किया । इसके बाद अल्लाउद्दीन ने दुर्ग में प्रवेश कर पद्मावती की खोज की । उसे चिताओं का भस्म मात्र दिखाई दिया ।

दुर्भागिया

एक गाँव में दो भाई थे। दोनों ने अपने पिता की जमीन-जायदाद बराबर बांट लिया और अपने-अपने परिवार अलग बसाये। लेकिन थोड़े ही समय में उनकी क़िस्मतें भी बदल गईं। बड़े भाई के कई बच्चे हुए, उनके पीछे सारी जायदाद खर्च हो गई। पर छोटे की क़िस्मत खुल गई वह अमीर बन बैठा।

आखिर बड़े भाई की हालत इतनी दयनीय हो गई कि उसके तथा उसके बीबी-बच्चों के पहनने के लिए साबित कपड़े भी नहीं रहे, बल्कि यहाँ तक कि भर पेट खाना मिलना भी मुश्किल हो गया।

उस हालत में बड़ा भाई अपने स्वाभिमान का ख्याल किये बिना छोटे भाई के घर पहुँचा और गिड़-गिड़ा कर पूछा—"भैया, हम लोग भूख से तड़प रहे हैं। भगवान की कृपा से तुम्हारे यहाँ खाने-पहनने की कोई कमी नहीं है। इसलिए तुम जो उचित समझो, मेरी मदद करो। तुम्हारे बिना मेरी मदद करने वाले कोई नहीं है। अगर मेरी हालत सुधर गई तो मैं तुम्हारी पाई-पाई चुकाने की कोशिश करूँगा।"

छोटा भाई थोड़ी देर सोच कर बोला—"मदद तो करनी चाहिए, लेकिन फिलहाल मैंने अपने ऊपर बहुत बड़ा खर्च मोल लिया है। कल मेरी जन्म-गांठ है। इसलिए मैंने एक भारी दावत का इंतजाम करके बड़े-बड़े लोगों के पास निमंत्रण भेजे हैं। पहली बात यह है कि बड़े लोगों को निमंत्रण नहीं देना है, निमंत्रण देने के बाद उनके ओहदे के मुताबिक़ दावतें देनी है, तुम्हीं सोचो, इस वक़्त कितना बड़ा खर्च मेरे सर पर आ पड़ा है। यह मुसीबत दूर होने पर हाथ में कुछ बचेगा तो उसे तुम्हें देने में मुझे कोई एतराज नहीं है। कल दावत

२५ वर्ष पहले की चन्दामामा की कहानी

पर तुम, भाभी और बच्चे सब लोग जरूर आइये। उस वक़्त हम फ़ुरसत के साथ बात करेंगे।"

"तुम ठाठ से जन्म-गांठ मनाते हो, ऐसी हालत में फटे-पुराने कपड़ों के साथ हम लोगों का उस दावत मे भाग लेना मुनासिब न होगा।" बड़े भाई चिंतापूर्ण स्वर में बोला।

"भैया, आप यह क्या कहते हैं? गरीब होने से क्या हम एक ही मां-बाप की संतान नहीं हैं?" छोटे भाई ने कहा।

बड़ा भाई खुशी के साथ घर पहुँचा और अपनी पत्नी से बोला-"कल मेरे छोटे भाई की जन्म-गांठ है। हम सब को निमंत्रण दिया है।"

"उफ़! आप यह क्या सोचते हैं? ये फटे-पुराने और चिथड़े पहन कर हम दावत में जावे तो लोग हमें देख हंसेंगे नहीं?" पत्नी ने टोका।

"निमंत्रण पाकर न जाना अच्छा न होगा। हमारी हालत तो किसी से छिपी नहीं है।" पति ने समझाया।

दूसरे दिन बड़े भाई का परिवार ऐन वक़्त पर छोटे भाई के घर पहुँचा। धनी मेहमानों से सारा घर शोभायमान था। उस उत्साह में छोटे भाई का ध्यान अपने बड़े भाई, भाभी और बच्चों की ओर बिलकुल न गया। किसी ने उनका सत्कार नहीं किया, यहाँ तक कि नौकरों ने भी उनकी पूछ-ताछ नहीं की। भोजन के वक़्त किसी ने उन्हें बुलाया नहीं, आखिरी पंक्ति में भी उन्हें जगह न मिली।

बड़े भाई की आशा निराशा में बदल गई। वह अपने परिवार के साथ भूख से तड़पते पैर घसीटते अपने घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में कोई अभागा उनके पीछे चला आ रहा था।

"हमारे पीछे कोई चला आ रहा है। सारी दुनिया ने हमारा साथ छोड़ दिया तो यह हमारे पीछे पड़ा हुआ है। क्या बात है?" पत्नी खीझ कर बोली। "वह शायद हमारा दुर्भाग्य होगा।"

पति ने जवाब दिया। हाँ! यह बात सच थी। वह आदमी उनका दुर्भाग्य ही था!

इसके पहले उस परिवार ने उसे देखा न था, मगर इधर कई दिनों से वह उनके पीछे लगा हुआ था।

दूसरे दिन बड़ा भाई जब अपने घर से बाहर निकला, तो दर्वाजे पर बैठा अभागा दिखाई दिया।

"देखो, इस दुनिया में कोई सुखी नहीं है। तुम चिंता क्यों करते हो? चलो, शराब खाने में जाकर दारु पियेंगे।" दुर्भाग्य ने कहा।

"मेरे पास तो पीने के लिए पैसे नहीं हैं न?" बड़े भाई ने पूछा।

"तुम अपना पुराना कंबल बेच डालो। जाड़े का मौसम बीत गया है न? अगले जाड़े तक जिंदा रहे तो फिर सोचा जाएगा।" दुर्भाग्य ने कहा।

इस पर बड़ा भाई घर के अंदर जाकर पुराना कंबल ले आया। उसे बेचने पर जो पैसे मिले, उन्हें खर्च करके दोनों ने शराब पी ली।

उस दिन से बड़ा भाई अपने घर की एक-एक चीज़ बेचकर शराब पीता गया। बड़े भाई को पता था कि दुर्भाग्य दिन-रात उसका पीछा कर रहा है, उसको और गहरे

गड्ढे में ढकेलता जा रहा है। यह बात जानकर भी बड़ा भाई कुछ न कर पाया।

मगर आखिर बड़े भाई के पास कुछ बच न रहा। कहीं मजदूरी करके थोड़े पैसे पाना चाहे तो दुर्भाग्य उसके अन्दर निराशा भर रहा था। आखिर उसने निश्चय कर लिया कि उस दुर्भाग्य का सामना करने पर ही वह सुधर सकता है।

एक दिन वे दोनों खेतों से होकर चल रहे थे। एक बंजर ज़मीन के बीच उन्हें एक बड़ी शिला दिखाई दी। इस पर बड़े भाई ने कहा–"यहाँ पर तो कोई पहाड़ नहीं है। ऐसी हालत में यह शिला कहाँ से आ गई? बड़ी मेहनत के साथ इसे

यहाँ पर कोई लाया होगा। इसके नीचे कोई खजाना गड़ा गया हो, हमें क्या पता ? "

"तुम तो सपने देखते हो। यहाँ पर खजाना क्यों होगा ? अगर हो तो हम जैसे दरिद्रों की आँखों में थोड़े ही पड़ेगा ? हमारी ऐसी खुश क़िस्मत भी है ?" दुर्भाग्य ने टोका।

लेकिन बड़ा भाई दुर्भाग्य की बातें सुनना नहीं चाहता था। वह उसी वक़्त गाँव के अन्दर गया। एक किसान के यहाँ बैल गाड़ी उधार पर लेकर शिला के पास फिर आ पहुँचा।

रास्ते में दुर्भाग्य बड़े भाई के अन्दर निराशा पैदा करता रहा। मगर बड़े भाई ने उसकी बातों की परवाह नहीं की।

शिला के पास पहुँचते ही बड़े भाई ने गाड़ी रोक दी और दुर्भाग्य से बोला– "तुम भी अपना हाथ लगाओ, इस शिला को हटा देंगे।" इसके बाद दोनों ने मिल कर शिला को अलग हटाया। बड़े भाई की कल्पना के अनुसार शिला के नीचे एक छोटा-सा गड्ढा निकल आया। उस गड्ढे में सोने के सिक्के भरे थे। दोनों ने उन सिक्कों को निकाल कर गाड़ी में भर दिया।

"लो, देखो, कुछ सिक्के कहीं बच गये हो।" बड़े भाई ने सलाह दी।

"देखने की क्या जरूरत है ? इसके अन्दर अब कुछ भी बचा नहीं है।" दुर्भाग्य ने झट जवाब दिया।

"अरे भाई, गड्ढे में उतर कर सावधानी से ढूँढ लो। शायद दो-चार सिक्के बच गये हो ! उन्हें क्यों छोड़ना है ?" बड़े भाई ने कहा।

दुर्भाग्य अनिच्छा से ही गड्ढे में उतरकर टटोलने लगा। उस वक़्त बड़े भाई ने शिला को गड्ढे पर ढकेल दिया और गाड़ी को हाँकते घर पहुँचा। इस प्रकार दुर्भाग्य से बड़े भाई का पिंड छूट गया।

इसके बाद बड़ा भाई अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगा।
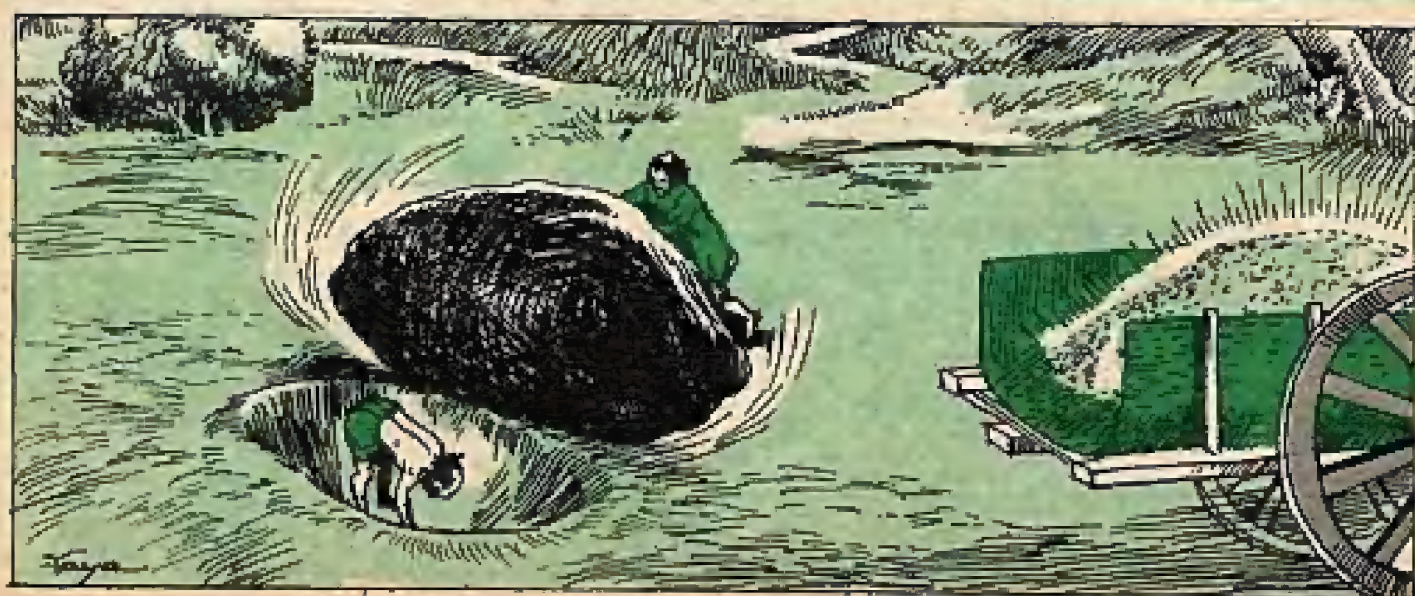
लक्ष्मी जैसी बहू

राधा एक दिन बड़े सबेरे घड़ा लेकर गाँव के छोर पर रहने वाले कुएँ में पानी भरने चल पड़ी। वह पानी भर ही रही थी कि हाथ के फिसल जाने से घड़ा पानी में गिरकर डूब गया। राधा को बड़ा दुख हुआ। वह सीढ़ियाँ चढ़ कर कुएँ के बाहर आई। इस ख्याल से चारों तरफ़ अपनी नजर दौड़ाने लगी कि शायद कोई व्यक्ति दिखाई दें।

उसी वक़्त अचानक एक युवक समीप के आम के पेड़ों की ओट में से बाहर निकला और राधा को कुएँ के पास घबराये खड़ी देख बोला—"वाह! गाँव हो तो यही एक अनोखा गाँव है! इसके चारों तरफ़ सुंदर पहाड़ और फलों के बगीचे हैं। हाँ, तुम इतने बड़े सबेरे अकेली क्यों इधर चली आई हो? कोई खतरा पैदा हो सकता है न?"
राधा उस युवक को देख पल भर के लिए चकित रह गई, फिर संभल कर बोली—"रोज मेरी मामी कुएँ से पानी भर लाती है। इधर दो दिनों से उसे बुखार चढ़ आया है। सबेरा होने पर वह मुझे पानी लाने केलिए नहीं भेजेंगी, इसलिए तड़के ही चली आई हूँ। मेरा घड़ा पानी में डूब गया है। क्या तुम तैरना जानते हो?"

"ओह! तैरना कौन नहीं जानता? मैं तो एक कुशल तैराक हूँ।" ये शब्द कहते युवक ने अपना कुर्ता उतारा, पेड़ की डाल पर लटकाया, कुएँ में उतर कर कुछ ही मिनटों में पानी से भरा घड़ा बाहर लाकर राधा के सामने रख दिया।

राधा खुशी से भर उठी, बोली—"तुमने मेरी बड़ी मदद की, मैं इसे कभी भूल नहीं सकती।" यों कहकर राधा चल दी।

उस युवक का नाम कन्हैया था। कुर्ता पहनते हुए युवक बोला—"मैंने बड़ी मदद

पूर्णेंदु राय

पहुँचाई तो तुमने मुझे अपना नाम तक नहीं बताया। मेरा नाम कन्हैया लाल है।"

राधा बोली—"मेरा नाम राधा है।" फिर वह तेजी के साथ चली गई।

दूसरे दिन सबेरे ही कुएँ से पानी भर कर राधा बाहर आयी, तभी समीप के पेड़ों के पास उसे कन्हैया दिखाई दिया। राधा उसे अनदेखा-सा अभिनय करके सर झुकाकर आगे बढ़ने लगी, इस पर कन्हैया हँसते हुए बोला—"मैंने कल भगवान से प्रार्थना की है कि तुम्हारी मामी की तबीयत जल्दी चंगी न होने पावे। भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली, इसीलिए मैं तुमको आज देख पाया।"

"क्या कहीं दूसरों को कष्ट देने केलिए भगवान से प्रार्थना की जाती है?" राधा ने पूछा।

"अच्छा, मुझे यह बताओ, मेरी प्रार्थना से तुम्हारी मामी को तक़लीफ़ होगी या तुम्हें।" कन्हैया ने राधा से पूछा।

"तुम मेरी मामी के बारे में कुछ नहीं जानते। अगर उन्हें यह मालूम हो गया कि मैं एक मर्द से बात कर रही हूँ, तो वे आग बबूले हो जायेंगी। हमारे वंश में कोई भी औरत अजनबियों के साथ बात नहीं करती, समझें।" राधा यों समझा कर तेजी के साथ गाँव की ओर चल पड़ी।

इसके बाद लगातार चार दिन तक कन्हैया बराबर कुएँ के पास राधा से बात करता रहा। पांचवें दिन सबेरे उसने राधा से कहा—"मैं कल अपने गाँव जा रहा हूँ। सुंदर प्रकृति के बीच बसा हुआ यह गाँव मुझे बड़ा अच्छा लगा, इससे भी बढ़ कर तुम मुझे बड़ी पसंद आ गई। मैं अपने माँ-बाप को मना कर तुम्हारे गाँव ले आऊँगा और तुम्हारे माता-पिता से बात करके तुमको हमेशा के लिए मैं अपने गाँव ले जाऊँगा।"

राधा ने कन्हैया की बातों का कोई जवाब नहीं दिया, चुपचाप अपने घर पहुँची। पर उसका मन विकल था। ऐसी हालत में

वह अकसर अपनी सहेली विमला के घर जाकर अपना वक्त बिता देती थी।

उस दिन राधा को विकल देख विमला ने इसका कारण पूछा। राधा ने उसे कन्हैया के बारे में सारा समाचार सुनाया और बोली—"अरी, वह कहता था कि वह मेरे साथ शादी करना चाहता है।"

"ओह, तब तो यह बड़ी ख़ुश ख़बरी है। तो फिर तुम क्यों परेशान लगती हो?" विमला ने पूछा।

"वह सिपाहियों की आँखों में धूल झोंककर भटकनेवाला चोर है।" इन शब्दों के साथ राधा ने एक चिट निकालकर विमला के हाथ दिया। उसमें लिखा था—"हे मेरे कन्हैया, सिपाही तुम्हारी खोज में लगे हुए हैं। इसलिए तुम भाग कर कहीं किसी कोने के गाँव में छिप जाओ।"

इसके बाद राधा ने कहा—"यह चिट मुझे पहले दिन ही मिल गया था। वह जब अपना कुर्ता उतार कर पेड़ की डाल पर लटका रहा था, तब उसकी जेब में से यह चिट नीचे गिर गया था।"

विमला पल भर सोच कर बोली—'तुम को जब यह मालूम हो गया कि वह एक चोर है, फिर भी अगर तुम रोज उससे बात करती हो तो इसका मतलब है कि तुम उसके साथ प्यार करती हो। सुनो, कल तुम एक काम करो। शादी के पहले ही पूरी तौर से एक दूसरे का परिचय प्राप्त करना हर हालत में अच्छा होता है।

निगल कर प्रकट रूप में सदा प्रसन्न कैसे दीखती हो ?"

"लाचारी की हालत में किसी को भी अपनी तक़लीफ़ें झेलने में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। दूसरों को मैं अपनी तक़लीफ़ें सुनाकर उनकी नज़रों में गिरना नहीं चाहती।" राधा ने कहा।

"इस प्रकार के अच्छे लक्षण तुम्हारे अन्दर पाकर ही मैंने तुम्हारे साथ शादी करने का निर्णय लिया है।" कन्हैया ने कहा।

राधा ने कन्हैया की ओर तीक्षण दृष्टि डाल कर पूछा—"अगर तुम मुझे ऐसे अच्छे गुणों वाली मानते हो तो तुमने यह कैसे सोचा कि मैं एक चोर के साथ शादी कर सकती हूँ ?"

यह सावल सुन कर कन्हैया लाल चकित हो राधा की ओर देखता रह गया, इस पर राधा ने वह चिट कन्हैया के हाथ थमा दिया। उस चिट को पढ़कर कन्हैया ठहाके मार कर हँस पड़ा और बोला—"इस चिट में जो कुछ लिखा है, वह मेरे बारे में ही लिखा गया है। पर मैं तुम्हें असली बात बताता हूँ कि यह चिट किसने और क्यों लिखा है ?"

इन शब्दों के साथ उसने अपनी कहानी सुनाई, "वह एक लखपति का पुत्र है। उसका पिता धन के पीछे जान देनेवाला है। मगर उसकी माँ इसके बिलकुल विपरीत

कल तुम उसका पूरा परिचय पूछ लो, देखेंगे, वह इसका क्या जवाब देता है ?"

दूसरे दिन राधा ने कन्हैया से यही सवाल पूछा। वह मुस्कुरा कर बोला—"वाह, यह भी खूब है ! क्या तुमने मुझे अपने बारे में कुछ बताया ? तुमने यह सच्ची बात मुझसे नहीं छिपाई कि तुम्हारी मामी तुमको नाना प्रकार की यातनाएँ देती हैं ?"

राधा की आँखों में आँसू आ गये। उसने दोनों हाथों से अपना मुँह ढांप लिया।

कन्हैया उसे सांत्वना देते हुए बोला—"मैंने तुम्हारे बारे में सारी बातें जान लीं, इसके बाद ही तुमसे शादी करने का निश्चय कर लिया है। तुम अपने सारे दुख को

स्वभाव की है। कन्हैया के पिता ने उसी गाँव के एक बड़े व्यापारी की पुत्री के साथ उसका विवाह निश्चय किया। वह कन्या एक दम काली-कलूटी और कुरूपिनी है।

कन्हैया को लगा कि उस कन्या के साथ शादी करने की अपेक्षा सन्यासी बन जाना कहीं उत्तम है। पर कन्हैया की माँ ने उसे समझाया—'बेटा शादी अब सिर्फ़ चार दिनों में होने वाली है न? तुम ये चार दिन अपने किसी दोस्त के घर में छिप जाओ। मुहूर्त के समय तुमको न पाकर कन्या का पिता रोष में आवेगा और वह अपनी इज्ज़त बचाने के लिए मुंहमांगा दहेज देकर किसी दूसरे वर के साथ अपनी बेटी की शादी संपन्न करेगा। इस तरह से हमारा पिंड छूट जाएगा।"

अपनी माँ की सलाह पाकर कन्हैया उसी गाँव में एक दोस्त के घर छिप गया। मगर उसके पिता ने दारोगा के पास जाकर फ़रियाद की कि उसका बेटा लापता है। यह खबर जब कन्हैया की माँ को मिली, तब उसकी माँ ने एक चिट भिजवा दिया कि अगर वह उस गाँव में रहेगा तो सारे घरों की तलाशी लेकर उसको पकड़ लेंगे। इसलिए अगर वह सिपाहियों से बचना चाहता है तो किसी दूर के गाँव में भाग जावे।"

"अब तुमने सच्ची बात समझ ली है। मेरे साथ शादी करने को तैयार हो?" कन्हैया ने राधा से पूछा।

'भगवान ने मुझे इतनी बुद्धि तो नहीं दी कि मैं खुद अपने बारे में समझ लूँ कि मैं कोई बेवकूफ़ हूँ या बुद्धू हूँ।" इन शब्दों के साथ राधा मुस्कुरा उठी।

"यह बात शादी के बाद मेरी माँ से पूछने पर वह स्वयं बता सकती हैं। लेकिन मेरे पिताजी यह सोच कर खुश हो जायेंगे कि लक्ष्मी याने संपत्ति को लाने वाली बहू भले ही प्राप्त न हो, मगर लक्ष्मी जैसी बहू उनके घर आ गई है। मैं अभी जाकर अपने माता-पिता को साथ ले आता हूँ।" यों समझा कर कन्हैयालाल वहाँ से चल पड़ा।

दुर्भाग्य

बात बहुत पुरानी है। विजयपुरी राज्य पर बलवंत वर्मा नामक राजा शासन करते थे। गोपाल शर्मा नामक एक व्यक्ति देशाटन करते विजयपुरी राज्य में पहुँचा। वहाँ पर एक गाँव की सीमा पर चोरों ने उसे लूट लिया।

शर्मा ने गाँव में जाकर मुखिये से शिकायत की। मुखिये ने शर्मा की ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाकर डांटा–"चोरों का पेशा चोरी करना और लूटना है, वरना वे लोग कैसे जीयेंगे ?"

शर्मा को उस राज्य पर, और उस पर शासन करने वाले राजा बलवंत वर्मा पर भी बड़ा गुस्सा आया। वह तुरंत सीधे राजधानी में पहुँच कर जोर-शोर से चिल्लाने लगा–"राजा बलवंत वर्मा राजा के पद के लिए ना लायक़ है और मूर्ख हैं। इस देश पर राजा नहीं, बल्कि चोर और डाकू राज्य करते है!"

इस पर सिपाहियों ने उसे बन्दी बनाकर राजा के सामने हाज़िर किया। राजा की निंदा करने के अपराध पर उसे दस साल की कारागार की सजा दी गई।

गोपाल शर्मा ने दस साल कारागार में बिताया, रिहा होने पर उत्साह में आकर जोर से चिल्ला उठा–"राजा बलवंत वर्मा विवेकशील हैं, महान ज्ञानी हैं। राजा बलवंत वर्मा की जय!"

सिपाहियों ने फ़िर से उसे बन्दी बनाया। शर्मा को इस बार बीस साल की सजा दी गई। वह अचरज में आ गया।

बात यह थी कि गोपाल शर्मा जब पहले कारागार में था, तब उस देश के सेनापति ने बलवंत वर्मा के प्रति विद्रोह किया और वह राजा बन बैठा। बेचारे शर्मा को यह समाचार बाद को ही मालूम हुआ।
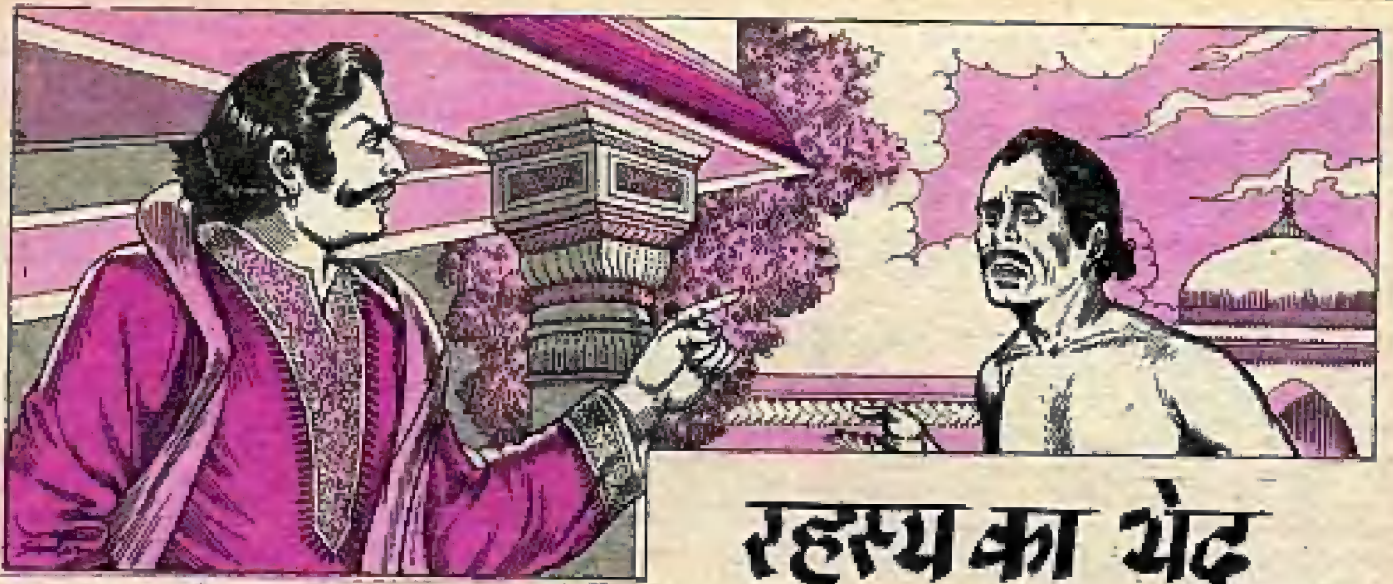
रहस्य का भेद

अनंतपुर का ज़मीन्दार कुलशेखर अपनी पत्नी को हद से ज़्यादा प्यार करता था। इस कारण वह कोई भी गुप्त बात अपनी पत्नी के कानों में डाले बिना रह नहीं पाता था। इस का परिणाम यह निकलता था कि उस की पत्नी के द्वारा सारे रहस्य सब जगह फैल जाते थे। इस संबंध में कुलशेखर ने अपनी पत्नी को कई तरह से समझाया कि वह इन रहस्यों को दूसरों पर न खोले, मगर फ़ायदा न रहा।

कुलशेखर के यहाँ राम और सोम नामक दो विश्वास पात्र नौकर थे। ज़मीन्दार उन्हें भी थोड़े रहस्य बताया करता था। पर राम के द्वारा सारे रहस्य खुल जाते थे, मगर सोम के द्वारा एक भी रहस्य प्रकट न होता था।

कुलशेखर ने कई बार राम को डांटा कि इस तरह रहस्य प्रकट नहीं करना चाहिए, लेकिन वह यही जवाब देता था—"मैं ये रहस्य अपनी पत्नी को छोड़ किसी को बताता नहीं हूँ। उसके पेट में एक भी बात नहीं पचती।" यही त्रुटि जमीन्दार के घर में भी थी, इस कारण वह अपने नौकर पर ज्यादा दबाव नहीं डाल पाता था।

एक दिन जमीन्दार ने सोम को बुलाकर पूछा—"तुमने अपनी पत्नी के गले में मंगल सूत्र बांधते वक़्त यह वचन दिया था कि सुख-दुखों को दोनों बराबर बांट लेंगे। ऐसी हालत में तुम जो रहस्य जानते हो, उन्हें तुम्हारी पत्नी को न बताना अन्याय नहीं है?"

"मालिक, मैं रोज जो भी रहस्य जानता हूँ, उसे मैं मेरी पत्नी से कभी नहीं छिपाता!" सोम ने जवाब दिया।

इस पर जमीन्दार के मन में शंका हुई कि सोम झूठ बोल रहा है। सच्ची बात जानने केलिए जमीन्दार ने अपने नौकरों की परीक्षा लेनी चाही।

श्यामलाल गर्ग

एक दिन जमीन्दार ने सोम से कहा–"सुनो, हमारी कचहरी के वैद्य ने बताया है कि मेरे पेट में कोई फोड़ा हो गया है, इसलिए मैं ज्यादा दिन जिंदा नहीं रह सकता। मुझे जल्दी अपने वारिस का चुनाव करना होगा। यह बात किसी से मत कहना।"

सोम के चले जाने पर राम को बुला कर जमीन्दार ने कहा–"सुनो, यह तो बड़ी गुप्त बात है। दो दिन पहले मेरे दुश्मनों ने मेरे खाने में जहर मिलाया और वे पकड़े गये। मैंने उनके नाम गुप्त रखे हैं।"

फिर क्या था, एक हफ्ते के अन्दर राम को बताई गई बात सब जगह फैल गई। सोम की बात कहीं खुली नहीं।

एक दिन जमीन्दार ने अपनी नौकरानी को सोम के घर भेज कर इस बात का पता लगाने का आदेश दिया कि उसकी तबीयत के बिगड़ जाने की बात वह कहाँ तक जानती है। नौकरानी ने सोम के घर से लौट कर यही बताया–"सरकार, सोम की पत्नी ने बताया है कि यह खबर वह एक सप्ताह पहले ही सुन चुकी है।" यह खबर पाकर जमीन्दार अचरज में आ गये। इसके बाद सोम को बुलवा कर कहा–"आज कल तुम्हारी पत्नी जैसी औरतें ढूंढ़े भी नहीं मिल सकतीं।" इन शब्दों के साथ उसने सारी घटना उसे सुनाई।

इस पर सोम ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया–"सरकार, इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। यदि हम किसी से यह कहें कि यह तो गुप्त बात है, किसी से मत कहो, तभी उसके दिल में दूसरों पर यह बात प्रकट करने की इच्छा पैदा हो जाती है। मैं मेरी पत्नी को सारे रहस्य बता देता हूँ, लेकिन यह भूल से भी नहीं कहता कि यह गुप्त बात है। इसलिए वह इन बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं देती!"

तब जाकर असली रहस्य जमीन्दार की समझ में आया। उन्होंने सोम को बढ़िया पुरस्कार दिया। इसके बाद उन्होंने अपनी पत्नी को जो रहस्य बताये, वे कहीं बाहर प्रकट नहीं हुए।

विश्वेश्वर

नानी एक दिन फल वृक्षों से भरे मार्ग से होकर जा रही थी, तब एक सुंदर बालक पेड़ पर बैठे गा रहा था। नानी के मन में उस बालक को छेड़ कर उसके साथ बातचीत करने की इच्छा हुई। वह बोली–"बेटा, एक फल फेंक दो। मेरे मुँह में पानी भरा आ रहा है।"

बालक ने मुस्कुराते हुए पूछा–"नानीजी, तुम्हें कैसा फल चाहिए? इस पेड़ में तरह-तरह के फल लदे हैं। बुढ़ापे को दूर करने वाला फल दूँ? या मृत्यु पर विजय पाने वाला फल? धन वाला फल दूँ?"

नानी समझ गई कि वह बालक सुब्रह्मण्येश्वर है। वह प्रणाम करके बोली–"सुब्रह्मण्येश्वर, मुझे ऐसा ज्ञान फल दीजिए जो बराबर लोगों में बाँटे जाने पर भी न घटे और ज्ञान की संपत्ति देते जावे।"

इस पर सुब्रह्मण्यस्वामी अपने निज रूप में मयूर पर प्रत्यक्ष हुए। नानी के सिर पर अपनी तलवार की नोक का स्पर्श करा कर सुब्रह्मण्येश्वर ने उस पर अनुग्रह किया। नानी को एक साथ अचानक विश्वस्वरूप ओंकार तत्व, ब्रह्म ज्ञान, तथा जीवन्मुक्ति के मार्ग का बोध हुआ। सुब्रह्मण्येश्वर नानी को आशीर्वाद देकर अंतर्धान हुए।

नानी ने पैदल चल कर घर-घर और गाँव गाँव में ज्ञान, भक्ति और जीवन के उत्तम धर्मों का प्रचार किया। नानी के मुँह से निकले मधुर वचन गीत जैसे बन

कर जन साधारण में फैल गये। देशाटन करते नानी संध्या के समय तक जंगल के मार्ग पर पहुँची। आसमान में घने बादल छा गये। चारों तरफ़ अंधेरा छा गया। बिजली कौंधने लगी। बूंदा-बूंदी शुरू हो गई। नानी पत्थर का ठोकर खाकर नीचे गिर पड़ी और उसके हाथ की लाठी दूर जा गिरी।

उस अंधेरे में किसी के आने की पैरों की मधुर आहट सुनाई दी। नानी ने सर उठाकर देखा। उसी समय बिजली चमक उठी। उस रोशनी में एक अत्यंत लाड़ला, तोंदवाला नाटा बालक दिखाई दिया। उस बालक ने नानी को अपने हाथों का सहारा देकर ऊपर उठाया और लाठी लाकर उसके हाथ दे दिया। बालक ने पूछा''–नानीजी, तुम कहाँ जा रही हो? किस तीर्थ का सेवन करना चाहती हो।''

"बेटा, मेरे लिए यह सारा विश्व एक दिव्य क्षेत्र है। लेकिन मुझे जिस क्षेत्र पर पहुँचना है, उसका रास्ता दीख नहीं रहा है। तुमने तो अपना परिचय नहीं दिया, छोटे बालक हो, इस अंधेरी रात में क्यों चले आये हो?" नानी ने पूछा।

"नानीजी, मैं तुम्हारे बचपन का दोस्त हूँ। तुम जन्म से ही मुझ को जानती हो। अंधेरे में मुझे पहचान नहीं पाती हो। यह बताओ कि तुम किस क्षेत्र में पहुँचना चाहती हो?" बालक ने कहा।

"तुम्हें बताऊँ तो फ़ायदा ही क्या? वह तो शिव सान्निध्य नामक महा क्षेत्र है।" नानी ने कहा।

"बस, यह मेरे लिए कौन बड़ा काम है? चलो, मैं तुम्हारा हाथ पकड़ कर ले जाऊँगा।" यों कहकर बालक ने नानी का हाथ पकड़ कर एक क़दम आगे बढ़ाया। इतने में बिजली कौंध गई। उस रोशनी में नानी ने देखा कि उसके हाथ को अपनी सूंड में थामकर विघ्नेश्वर नानी को चला रहे हैं, इस पर वह आँखें मूंदकर बोली–"हे देव, बचपन से मुझे तुम्हीं चलाते थे।"

बहुत दूर जाने पर विघ्नेश्वर बोले-"नानीजी, हम शिवजी के सान्निध्य तक पहुँच गये हैं।" ये बातें सुन नानी ने आँखें खोल कर देखा।

नानी को वहाँ पर सिवाय रोशनी के कुछ दिखाई नहीं दिया। नीचे नजर डालने पर उसे कई नक्षत्रों के मण्डल दिखाई दिये। इन के अलावा अनेक सूर्य कुटुंब, धूम केतु, वायु रूप में चक्कर काटते, बढ़ने वाली ज्योतियाँ, प्रकाश-चक्रों के जैसे तेज गति से घूमने वाले तेजो मण्डलों से भरा अनंत विश्व उस के पैरों के नीचे अत्यंत शोभायमान दिखाई दिया।

इस पर विघ्नेश्वर नानी का हाथ छोड़ कर बोले-"नानीजी, तुम शिवजी के सान्निध्य में पहुँच गई हो। यहाँ पर काल नामक कोई चीज नहीं होती, नाश भी नहीं है, यही सृस्टि, स्थिति और लय से अतीत शिवजी का सान्निध्य है। सच्चा कैलास है! विश्वनाथ और विश्वेश्वर बने शिवजी के दर्शन कर लो।" यों कह कर विघ्नेश्वर अंतर्धान हो गये।

नानी को प्रकृति में ऊपर-नीचे तक समान रूप से व्याप्त एक बड़ी ज्योति दिखाई दी। उस ज्योति के भीतर प्रमथ गणों के द्वारा किये जाने वाला स्त्रोत्र ओंकार ध्वनि के रूप में सुनाई दे रहा था। विश्वेश्वर शिवजी उसे दिखाई दिये। उन के दोनों तरफ़ विघ्नेश्वर, पार्वती, कुमारस्वामी, नंदी इत्यादि थे।

नानी को शिवजी का साक्षात्कार हुआ। शिवजी ने उस पर अनुग्रह किया।

पावन मित्र ने भांप लिया कि मण्डप के चित्रों में ईख अपने हाथ में लिये हुए विघ्नेश्वर का एक भव्य चित्र है जिसकी ओर एक किसान एकटक ताक रहा है। इस पर मिश्र जी ने उस चित्र की कहानी शुरू की-एक ज़मीन्दार हर साल विनायक की अर्चनाएँ कराता और उनके उत्सव मनाते वह गणेशभक्त शिरोमणि कहलाया। ज़मीन्दार के यहाँ सैकड़ों

नौकर भोला था और थोड़े पैसों में संतुष्ट होने वाला था, इस कारण कभी वह कोई शिकायत नहीं करता था।

पर जमीन्दार की पत्नी बड़ी साधु स्वभाव की औरत थी। वह जहाँ भी अन्याय देखती, अपने मन में गणेशजी से निवेदन करती थी। अपने पति के द्वारा नौकर को थोड़ी सी मजूरी देते देख कभी उसे सलाह देती—"बेचारे, ये लोग जो मेहनत कर रहे हैं, उसकी सही मजूरी आप नहीं दे रहे हैं। मेहनत देख कर उसके मुताबिक़ मजूरी क्यों नहीं देते?"

"वाह, तुम्हारी सलाह का पालन करे तो हमें बचेगा ही क्या? आखिर तुमसे किसने सलाह मांगी?" जमीन्दार अपनी पत्नी को डांट देता। इस पर जमीन्दार की पत्नी अपने मन में सोचती—"मेहनत करने वालों का पेट काटकर ये उत्सव और पूजा-अर्चनाएँ करवाने से फ़ायदा ही क्या है? भगवान, आप इनको सद्बुद्धि दीजिए।"

एकड़ जमीन के साथ गन्ने का एक बहुत बड़ा बगीचा भी था।

गन्ने के बगीचे की देखभाल करते हर साल भारी मात्रा में गन्ना पैदा करने वाला एक नौकर था जो गणेशजी का परम भक्त था। वह सदा गणेशजी का स्मरण करते अपने मन में यही निवेदन किया करता था—"हे गणेश्वर, इस बार ईख की फसल ज्यादा से ज्यादा पैदा करने का अनुग्रह कीजिए।" नौकर के साथ उस की पत्नी और दस साल का लड़का भी कड़ी मेहनत करते, फिर भी जमीन्दार उन्हें पर्याप्त मेहनताना नहीं देता था। जो मजूरी देता, वह भी वक़्त पर नहीं देता था।

उस साल एक हज़ार गन्नों वाले बण्डल गाड़ियों में भर कर जमीन्दार के गोदामों में पहुँचाये गये। उस फसल को देख जमीन्दार बोला—"यह सब गणेशजी की कृपा का फल है। आखिर हम गणेशजी की पूजा-अर्चनाएँ और उत्सव किसलिए कर रहे हैं? वे सब थोड़े ही व्यर्थ जायेंगे?"

"तो क्या हमारे नौकर की मेहनत की कोई क़ीमत नहीं है ?" जमीन्दार की पत्नी ने पूछा।

"ओह, तुम्हारी मेहर्बानी की भी कोई हद है ? अगर इस तरह नौकर और मजदूरों का हम समर्थन करते जायेंगे तो हमें भी झोला बांध कर उनके पीछे चलना पड़ेगा। इन मजदूरों की क्या हस्ती है ? यह सब भगवान गणेशजी की कृपा है!" जमीन्दार ने झट जवाब दिया।

नौकर का लड़का गणेश जी का परम भक्त था। विनायक चतुर्थी के दिन वह बगीचों व तालाबों में जाकर सफ़ेद कुमुद, लाल कमल, तरह-तरह के फूल और पत्ते लाकर घर-घर में पहुँचा देता था।

एक बार विनायक चौथ आ पड़ी। लड़के की उम्र के बढ़ने के साथ उसकी बुद्धि का भी विकास हो रहा था। उस दिन उस लड़के के पिता गन्ने के बण्डलों को जमीन्दार के गोदामों में ढो लाकर भर रहा था। उसने अपने बाप के पास जाकर पूछा—"बाबूजी, हम भी गणेशजी को नैवेद्य चढ़ायेंगे। क्या मैं एक गन्ना ले जाऊँ ?"

नौकर ने बण्डल में से एक गन्ना निकाल कर अपने बेटे के हाथ थमा दिया। उसी वक़्त जमीन्दार घर से बाहर निकला। जमीन्दार के क्रोध का पारा चढ़ गया। उसने गरज कर पूछा—"अरे बदमाश, क्या तुम सारा गन्ना अपने घर पहुँचा रहे हो ?" यों डांट कर उस पर कोड़े बरसाने लगा। उस दृश्य को गाँव भर के लोगों ने देखा। मगर किसी ने भी नौकर को बचाने की कोशिश नहीं की। क्यों कि जमीन्दार के विरुद्ध मुँह खोलने की किसी की हिम्मत न हुई।

नौकर कोड़े की मारों को सहन नहीं कर पाया, आख़िर हिम्मत करके बोला—"सरकार, आज विनायक चतुर्थी है; इसलिए भगवान को नैवेद्य चढ़ाने केलिए मैंने सिर्फ़ एक ही गन्ना अपने लड़के के हाथ दिया है। आप को विश्वास न हो तो मेरे घर की तलाशी लीजिए!"

"क्या बोला ? तुम जैसे नीच जाति वाले पूजा और अर्चना भी करते हो ? तुम्हें गणेशजी की कृपा भी चाहिए ?" जमीन्दार ने कड़क कर पूछा।

"हुजूर हम नीच जाति के हुए तो क्या हुआ ? क्या हमारे अन्दर भगवान के प्रति भक्ति नहीं होती ?" नौकर ने पूछा।

जमीन्दार उसका मजाक़ उड़ाते हुए बोला–"अरे, तुम्हारा चेहरा देखने से पता चलता है न ? तुम भी बड़े भक्त निकल आये ! भक्ति से तुम लोग इतने दूर हो, जितनी दूर सरग और पाताल के बीच होती है। जाओ, घर से गन्ना उठा लाओ।" नौकर से रहा नहीं गया। उसने उल्टा सवाल पूछा–"सरकार, आखिर एक गन्ने के वास्ते आप यों तड़प रहे हैं ? इससे आपका बनता-बिगड़ता क्या है ? हम तो गाड़ियाँ लदकर आपके गोदाम भर रहे हैं। एक गन्ने से आप कौन सा महल खड़ा करने वाले हैं ?"

नौकर की बातें सुन जमीन्दार भड़क उठा और गरज कर बोला–"जानते हो, एक नहीं, दस नहीं, एक हज़ार गन्ने भी मेरे लिए एक तिनके के समान हैं। सुनो, सबेरा होने के पहले तुम्हें एक हज़ार गन्ने चबाना होगा। गन्नों को चूसने के बाद उनकी सीठी का ढेर मुझे दिखाना होगा। वरना तुम्हें एक गन्ने के पीछे एक हज़ार कोड़े लगवाये जायेंगे; समझे।" यों डांट कर अपने सेवकों के द्वारा उसके हाथ बंधवा दिये, इसके बाद उसे एक गोदाम में ढकेलवा कर उसके आगे एक हज़ार गन्नों वाला बन्डल डलवा दिया।

जमीन्दार बड़ा सनकी स्वभाव वाला था। उसके मन में जब जो बात आती है, वह उसी वक़्त आगे-पीछे सोचे बिना कर बैठता है। उसने उस गोदाम के चारों तरफ़ अपने भटों को पहरे पर बिठाया।

लेकिन जमीन्दार की पत्नी से यह अन्याय और अत्याचार देखा न गया। उसने मन में गणेशजी की यों प्रार्थना की– "विघ्नेश्वर, हमारा नौकर बेचारा
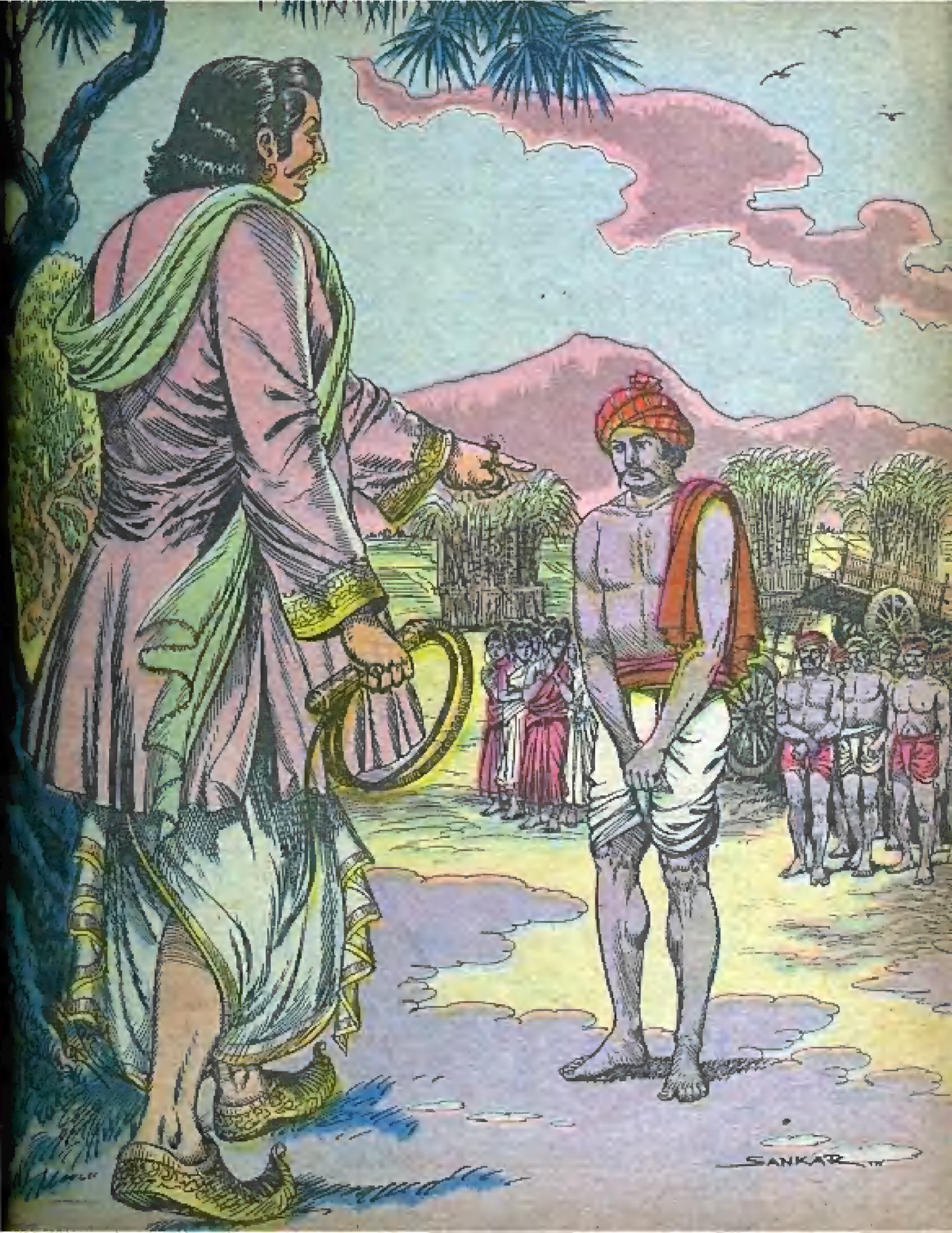
भोला-भाला है। अगर वह गन्ना खाने बैठ जाएगा तो नाहक मर जाएगा। नहीं खायगा तो मेरे पतिदेव के हाथों में मार खाकर मर जाएगा। आप ही उसको बचाने की कृपा कीजिए।"

नौकर के दिमाग में कुछ नहीं सूझा। वह लाचार होकर विघ्नेश्वर का स्मरण करते संध्या के समय तक यों ही सो गया।

सवेरा होते ही जमीन्दार ने जाकर गोदाम में झांककर देखा। उसे नौकर के सामने हिमालय पर्वत जैसे गन्ने की सीठी का सफ़ेद ढेर दिखाई दिया। जमीन्दार आश्चर्य में आ गया और उसका खुला हुआ मुंह खुला ही रह गया।

जमीन्दार की चिल्लाहट सुनकर उसकी पत्नी वहाँ पर दौड़ कर आ पहुँची। जमीन्दार ने उस से कहा—"हमारा सर्वनाश हो गया है! गोदाम में एक भी गन्ना बच न रहा। सब कुछ सीठी हो गया है। हमारा नौकर आदमी नहीं, भूत है। चलो, यह हम लोगों को खा जाएगा।"

इस पर जमीन्दार की पत्नी ने उसे समझाया—"हमारा नौकर न कोई भूत है और न उसने ये गन्ने खाये हैं। मैंने अपनी आँखों से खुद देखा है। सवेरा होने के पहले ही एक हाथी का चिघाड़ सुन कर मैं जाग उठी। मैं ने खिड़की में से देखा। एक बहुत बड़ा हाथी गन्ना चरते दिखाई दिया और थोड़ी ही देर में गायब हो गया।"

"यह तुम क्या बकती हो? मैंने आस-पास में कहीं किसी हाथी को कभी देखा तक नहीं। अब कहाँ से आ गया?" जमीन्दार यों अपनी पत्नी को डांट ही रहा था, तभी कुछ लोग गणेशजी के उत्सव देख लौटते हुए दौड़ आये और बोले—"हमने मण्डप में गणेशजी की जो मूर्ति रखी थी, वह पिछली रात से दिखाई नहीं दे रही है। हम ने सभी जगह उसको ढूंढा, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। फिर गोदाम के भीतर झांकते बोले—"लीजिए, वहाँ पर वह मूर्ति जो है!" यों कहते वे लोग उस ओर दौड़ पड़े।
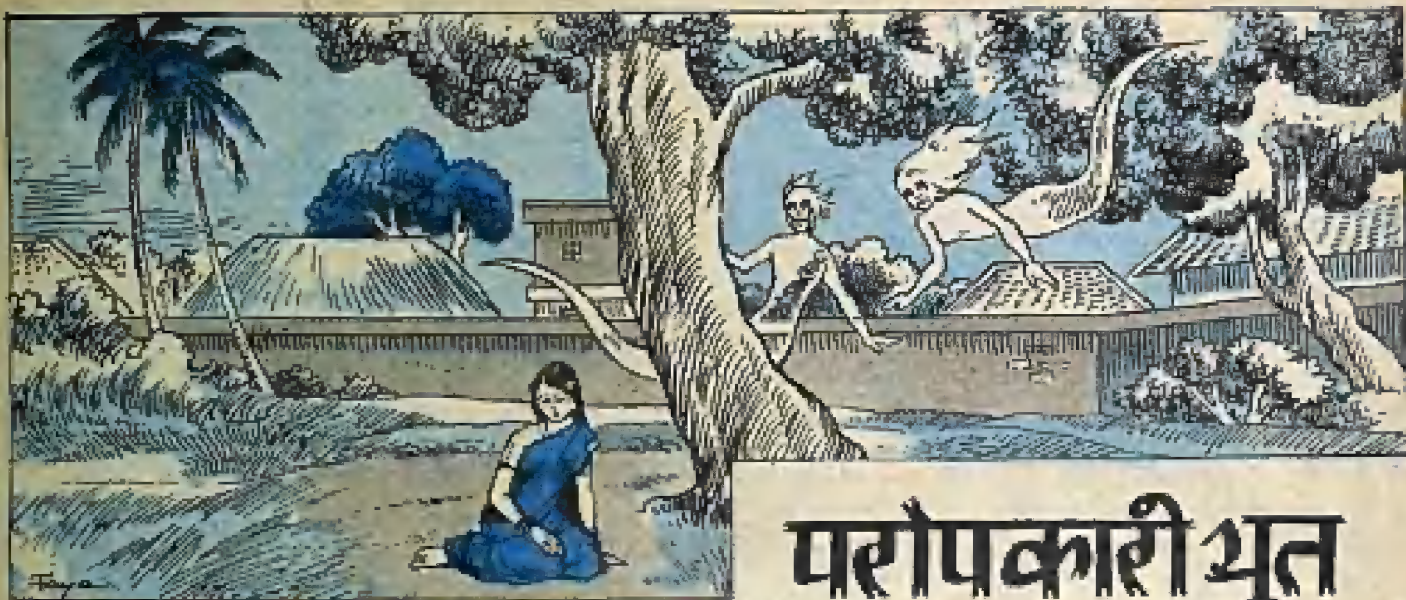
परोपकारी भूत

रुक्मिणी की सास दुर्गावती प्रचण्ड स्वभाववाली औरत थी। वह हमेशा इस बहाने अपनी सारी बहुओं को सताया करती थी कि वे दहेज की रक़म कम लाई हैं। रुक्मिणी के मायके में उसके अकेले भाई को छोड़ कोई और न था। उसकी भाभी भी अव्वल दर्जे की कंजूस थी। इस कारण से जब दूसरी बहुएँ पर्व-त्योहारों के समय अपने मायके जाकर साड़ियाँ व गहनों के साथ ससुराल लौटतीं तो रुक्मिणी खाली हाथ लौट आती थी। इस कारण से भी दुर्गावती रुक्मिणी को ताने दिया करती थी।

बेचारे रुक्मिणी का पति ये सारी बातें जानता न था। वह सवेरे से लेकर शाम तक खेती के कामों में डूबा रहता था। सास जब भी रुक्मिणी को खरी-खोटी या गालियाँ सुनाती, तब वह पिछवाड़े के इमलीवाले पेड़ के नीचे बैठकर आँसू बहाया करती थी।

हाल ही में उस इमली के पेड़ पर दो भूत आ जमे थे। अपनी जिंदगी के दिनों में वे दोनों भूत पति-पत्नी थे और संपन्न परिवार के थे। वे परोपकारी नाम से अपने गाँव में मशहूर थे। एक बार नाव में यात्रा करते वे दोनों नदी में डूब गये और इस प्रकार भूत बन बैठे थे।

वे दोनों अपने धन और गहनों को एक थैले में भरकर एक श्मशान के पास के बरगद के पास पहुँचे। उस पेड़ पर पहले से ही कई भूत आ जमे थे। उन भूतों ने इन नये दंपति को देख पूछा—"आइंदा तुम लोगों को इस धन और गहनों की जरूरत ही क्या है?"

"धन और गहने सर के बोझ कैसे बन सकते हैं? इनके द्वारा हम खतरे में फंसे हुए मनुष्यों की मदद कर सकते हैं न?" भूतों ने जवाब दिया।

जयशंकर त्रिपाठी

भूतों ने देखा कि रोज रुक्मिणी अपनी सास की डांट-फटकार पाकर पेड़ के नीचे आकर रोया करती है। इसका कारण जानने के लिए दोनों भूत एक दिन दुर्गावती के घर में घुस गये और रुक्मिणी के रोने का कारण जान लिया।

मादा भूत ने अपने पति से कहा—"जानते हो कि रुक्मिणी रोज पेड़ के नीचे बैठकर क्यों रोती है? वह अन्य बहुओं की तरह अपने मायके से कपड़े व गहने नहीं लाती; इस बात को लेकर वह दुष्ट सास दुर्गावती उसे रोज किसी न किसी बहाने सताती है।"

"कपड़े और गहने तो हम रुक्मिणी को दे सकते हैं, लेकिन यह कैसे मुमकिन होगा?" नर भूत ने अपना संदेह प्रकट किया। इसके बाद दोनों भूतों ने आपस में सलाह-मशविरा किया और वे एक निर्णय पर पहुँचे। तब नर भूत धन का थैला लाने बरगद के पास पहुँचा।

उसे देखते ही बरगदवाले भूत मजाक करने लगे—"ओह, परोपकारी भूत दाता राम चला आया है। सुनो, बात क्या है?"

"विपदा में फंसी एक औरत की मदद करनी है। मैं खोखले में छिपाये गये धन में से थोड़ा ले जाने आया हूँ।" नर भूत ने समझाया।

"ओह, तुम दोनों तो कृत युग के भूत मालूम होते हो! तुम जैसे लोग नाहक खतरे मोल लेते हैं! इसलिए यहाँ पर तुम दोनों के लिए कोई जगह नहीं है!" यों बरगद के भूतों ने उन्हें डांट दिया।

"अच्छी बात है! हम कहीं और जगह जाकर अपना निवास बनायेंगे! लेकिन कम से कम इस थैले को पेड़ के खोखले में छिपाने दो न?" यों दोनों भूत ने विनती की।

बरगद के भूतों ने मान लिया। इस पर उन भूतों ने अपने थैले को पेड़ के खोखले में छिपा दिया और रुक्मिणी के मकान के पिछवाड़ेवाले इमली के पेड़ को अपना निवास बनाया।

"उफ! धूर्त मानवों की तुम मदद देना चाहते हो? पर यह धन तुम्हारा है, जो चाहो, करो।" बरगद के भूतों ने कहा।

दूसरे दिन सवेरे रुक्मिणी जब अपने घर के आंगन में पानी छिड़क रही थी, तब वृद्ध दंपति उधर से निकले और रुक्मिणी को देख पूछा-"बेटी रुक्मिणी, कुशल हो न?"

रुक्मिणी ने सर उठाकर उस वृद्ध दंपति को देखा और वह अचरज में आ गई। बूढ़ी औरत का कंठ गहनों से लदा था और वह एक क़ीमती रेशमी साड़ी पहने हुए थी। वृद्ध रेशमी धोती और जरीदार शाल पहने हुए था। उसकी उंगलियों में सोने की अंगूठियां दमक रही थीं।

उसी वक़्त दुर्गावती घर से बाहर आयी और उस वृद्ध दंपति को देख चकित रह गई। बूढ़ी औरत रुक्मिणी के पास पहुँचकर बोली-"अरी, तुम को बचपन में देखा था, कितनी बड़ी हो गई हो! क्या तुमने मुझे अभी तक पहचाना नहीं? मैं तुम्हारी चाची कांताबाई हूँ।"

अब दुर्गावती संभल गई। बोली-"अरी रुक्मिणी, इन लोगों को आंगन में ही खड़ा करके उनके चेहरे ताकती क्यों हो? अन्दर बुला लो बेटी।"

इसके बाद रुक्मिणी के पीछे वृद्ध दंपति भी घर के अन्दर आ गये। बूढ़ी औरत दुर्गावती से बोली-"मैं रुक्मिणी की माँ की चचेरी बहन हूँ। हमारे पास बहुत

कैसा कपट नाटक रचा है? क्या तुमने कभी मुझे बताया भी है कि तुम्हारी चाची बड़ी अमीर औरत है? तुम्हारे पीहर के लोगों ने आज तक सास के उपहार के नाम से एक भी चीज मेरे पास नहीं भेजी। मैं अब तुम को तुम्हारे पीहर भगाकर इसका फ़ैसला करूँगी।"

ये बातें सुनने पर भूतों का दिमाग चकराने लगा। उन्होंने सोचा कि वे पहले दुर्गावती को संतुष्ट कर देते तो बड़ा ही अच्छा होता। इसके बाद नर भूत धन लाने बरगद के पास पहुँचा। उस वक़्त एक बूढ़ी भूतनी खोखले के पास बैठकर ऊँघ रही थी।

उसने नर भूत को देख पूछा—"तुम इसके पहले एक बार किसी की मदद करने के वास्ते थोड़ा धन ले गये थे। क्या उनके कष्ट दूर हो गये?"

"अभी कहाँ दूर हुए हैं? अगर वह धन हमने सास दुर्गावती के हाथ धर दिये होते तो बहू की तक़लीफ़ें दूर हुई होतीं।" नर भूत ने कहा।

इस पर बूढ़ी भूतनी चौंक पड़ी, जोर से जंभाइयाँ लेकर बोली—"तुम किस दुर्गावती की बात करते हो?"

नर भूत ने दुर्गावती के मकान का सारा हुलिया बताया।

सारी संपत्ति है। लेकिन हमें कोई संतान नहीं है। इसलिए हम कई दिनों से तीर्थाटन कर रहे हैं। अब हम अयोध्या जा रहे हैं।" यों कहकर थैली में से दो रेशमी साड़ियाँ और कुछ गहने निकालकर रुक्मिणी के हाथ दिये।

इसके बाद दुर्गावती के गिड़गिड़ाने पर भी वहाँ पर रुके बिना वृद्ध दंपति उनके घर से निकल पड़े और उस सुनसान गली को पार करते ही गायब हो गये, फिर भूतों के रूप में इमली के पेड़ पर जा बैठे।

उन परोपकारी भूतों के जाते ही दुर्गावती रुक्मिणी की ओर क्रोध भरी नज़र डालकर डांटने लगी—"अरी चुड़ैल, तुमने आज तक

"ओह, उस चुड़ैल दुर्गा की बात करते हो? तब तो उसका मामला मैं ठीक करूँगी। तुम चुपचाप जाकर उसके पिछवाड़े के इमली के पेड़ पर जा बैठो।" बूढ़ी भूतनी ने समझाया।

उस दिन रात को बूढ़ी भूतनी दुर्गावती के घर पहुँची। गहरी नींद सोनेवाली दुर्गावती को थपकी देकर जगाया और पूछा–"अरी बहू! बताओ, मैं कौन हूँ?"

दुर्गावती कांपते हुए बोली–"तुम मेरी सासजी हो न?"

"हाँ, हाँ! मैं ही हूँ! मेरे ज़िंदा रहते वक़्त तुम को सता-सताकर उस पाप के फलस्वरूप यों मैं भूत की ज़िंदगी जी रही हूँ। यदि तुम मेरी तरह भूतनी बनना चाहती हो तो कोई सवाल ही नहीं उठता, हम दोनों मजे से बरगद की डालों में सास-बहू के रूप में एक बार और अपनी ज़िंदगी काटेंगी। अगर ऐसी ज़िंदगी जीना तुम नहीं चाहती हो तो तुम अपनी छोटी बहू रुक्मिणी के साथ अच्छा बर्ताव करो।" बूढ़ी भूतनी ने चेतावनी दी। तब जाकर दुर्गावती को स्मरण आया कि उसके द्वारा मायके से ज़्यादा दहेज न लाने के कारण उसकी सास ने उसे किस तरह की यातनाएँ दी हैं। इस पर वह अपने कान पकड़कर उठा-बैठी करते बोली–"सासजी, तुमने ज़िंदा रहते वक़्त मुझे मार-पीटकर, गालियाँ सुनाकर खूब सताया, लेकिन मरने के बाद लौट आकर तुमने मुझे अच्छी सीख दी। आज से मैं अपनी छोटी बहू रुक्मिणी के प्रति अपनी बेटी के जैसा व्यवहार करूँगी।"

इसके बाद वह बूढ़ी भूतनी इमली के पेड़ पर जाकर परोपकारी भूतों से बोली–"आइंदा दुर्गावती अपनी छोटी बहू को कभी न सतायेगी। इसलिए इस बुढ़ापे में तुम दोनों और लोगों की मदद करने जाकर नाहक़ परेशान मत हो जाओ।"

उस दिन से फिर कभी रुक्मिणी को इमली के पेड़ के नीचे आकर आँसू भरते हुए भूतों ने न देखा।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जनवरी १९८३ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

★

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

सितम्बर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : वतन की पहरेदार हूँ मैं!

द्वितीय फोटो : लड़ने को तैयार हूँ मैं!!

प्रेषक : अखिलेश सोनी प्रतीक, गांधी चौक कवर्धा, जिला. राजानंद गाँव (म. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. ५० इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

सात समंदर पार मेरी नाव चली
लाल परी के गांव मेरी नाव चली
भर भर लाऊं जॅम्स नाव में अपनी झटपट
लेना हो जो जॅम्स किनारे से हटना मत
GEMS
कितना सुन्दर सपना...झट ले लो जॅम अपना!
कॅडबरिज़
चॉकलेट्स
कॅडबरिज़ जॅम्स हैं ही ऐसे; मीठे मीठे सपनों जैसे!
OBM/8341

आओ बच्चो, लाओ रंग
NAME
ADDRESS
A/C No
इस बार आप के लिए एक
अनोखी ख़बर लाए हैं।
रंगने की प्रतियोगिता :
आपको इतना करना है कि
राजू की पास बुक में रंग भरें
और हमको भेज दें। हम ढेर सारे
पुरस्कार दे रहे हैं। अपनी मम्मी
या पापा से कहें कि इस
रोमांचकारी प्रतियोगिता के
बारे में अगले पन्ने से जान लें।
केनरा बैंक
(एक राष्ट्रीयकृत बैंक)

NAME
ADDRESS
A/C NO
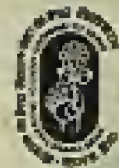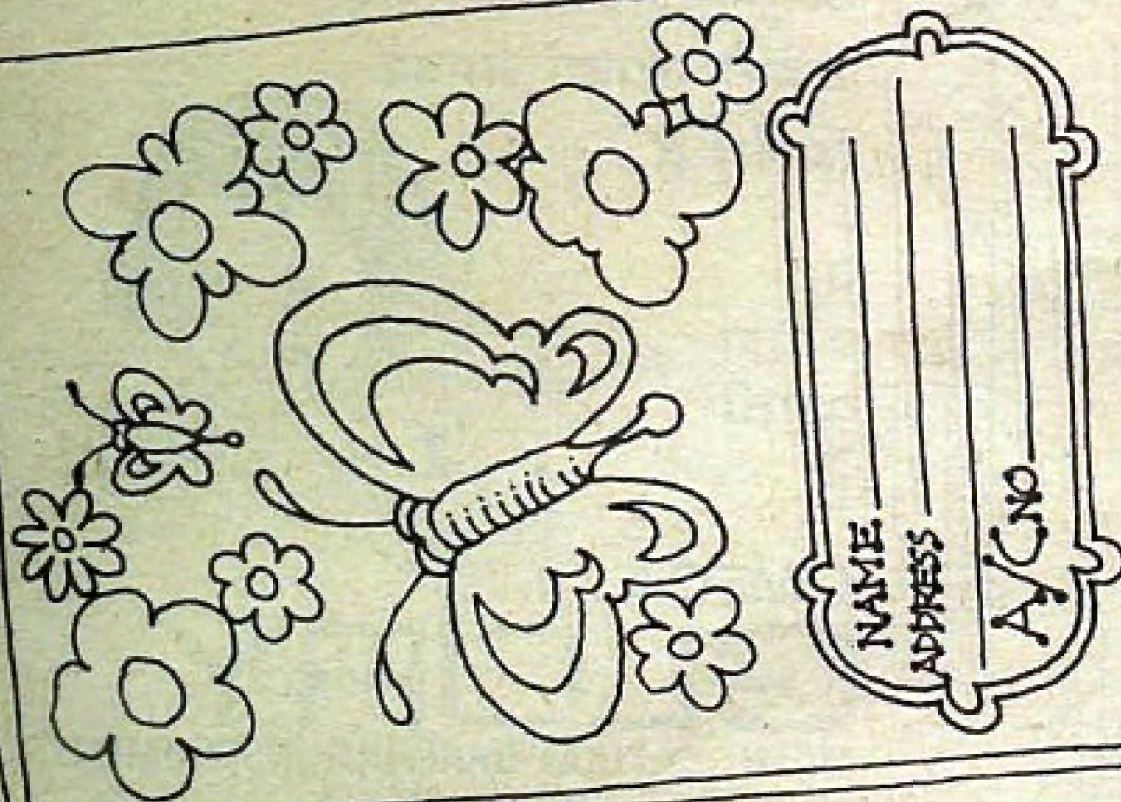
नाम :

आयु :

पता :

१. ७-१२ के आयुवाले बच्चे इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।

२. प्रतिभागियों को चाहिए कि ऊपर दी गयी पास बुक के नमूने को वाटर कलर, क्रेयॉन, कलर पेन्सिल या फेल्ट पेन से रंगाए।

३. एक प्रतिभागी, जितनी चाहे, प्रविष्टियां भेज सकता है।

४. प्रविष्टियां पूरी करके दिए गए पते पर दिनांक 15-12-82 तक भेज दी जाएँ।

५. परिणाम, इस पत्रिका के आगामी किसी अंक में घोषित किया जाएगा।

६. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा और सभी पहलुओं में बाध्य रहेगा।

P.R. SECTION
CANARA BANK
HEAD OFFICE
112 J.C. ROAD
BANGALORE 560 002

केनरा बैंक

(एक राष्ट्रीयकृत बैंक)

गीता को रेखागणित में
अचूक ड्रॉइंग के लिए
सबसे ज्यादा नम्बर
मिलते हैं
वह
प्रयोग
करती
है
OMEGA
GLORY
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
विद्यार्थियों के लिए एक उत्कृष्ट टिकाऊ
कम्पास बौक्स:
★ उत्तम प्रकार के पारदर्शक प्लास्टिक के बने रूलर, डिग्री प्रोट्रक्टर और सेटस्क्वेर ★ बढ़िया धातु के बने और सरलतापूर्वक हेर-फेर किये जा सकने वाले कम्पास और डिवाइडर
★ उच्च श्रेणी की पेंसिल और इरेज़र.
ओमेगा - गुणवत्ता में अंतिम शब्द.
OMEGA
GLORY
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
TOP PLEXCONCIL EXPORT AWARD
OMEGA
निर्माता :
अलाइड इंस्ट्रुमेंटस् प्रा. लि.
३०, सी-डी, गवर्नमेंट इंडस्ट्रियल एस्टेट, कांदिवली, बम्बई - ४०० ०६७
AIPL. तार: ARTCORNER.

नन्हा टिम
और उसका
'चॉकलेटवाला'
झोला
'पु' के देश में एक विशालकाय राक्षस था. उसका नाम था बिग-जो। गांव के सारे बच्चे उस राक्षस से घबराते थे. क्योंकि बड़ा ही दुष्ट राक्षस था. बिग-जो गांववालों को तरह-तरह से सताता था. इसलिए एक दिन सारे गांववालों ने इकट्ठे होकर यह फैसला किया कि क्यों न नन्हें टिम को बुलाया जाए जो उन्हें इस मुसीबत से छुटकारा दिलाए। नन्हा टिम नदी के उस पार रहता था. जो अपनी बहादुरी और अक्ल के लिए जाना जाता था. गांववालों को दुष्ट राक्षस के पंजे से छुड़ाने के लिए टिम,पु के देश में आ पहुंचा. दानव से निपटने की तैयारियां शुरू कीं. अपनी तलवार की धार तेज़ की और झोली में भर ली ढेर सारी रावलगांव
स्वीट्स, टॉफ़ी और एक्लेअर्स !
क्योंकि यही तो थीं उसकी मनपसंद चॉकलेट...जो उसमें नयी ताकत और नया विश्वास जगाती थीं। रात सोने से पहले उसने एक्लेअर्स खाईं और सुबह टॉफियों का स्वाद लेकर निकल पड़ा बिग-जो का मुकाबला करने. उधर बिग-जो को इन्तज़ार था नन्हें टिम का...जैसे ही उसने छोटे से टिम को देखा, ज़ोरदार अट्टहास करके उसने कहा–
"तो ये चींटी सा नन्हा बच्चा मेरा मुकाबला करेगा?" फिर अचानक उसकी नज़र टिम के चॉकलेट वाली झोली पर पड़ी.
"इस झोली में क्या है?"— दानव ने पूछा. "खाना!"— टिम ने कहा और फौरन दौड़ पड़ा. "यह झोला मुझे दे दो!"— राक्षस यह कह टिम के पीछे-पीछे भागा.
टिम ने झटपट एक रावलगांव चॉकलेट निकालकर दैत्य की तरफ उछाल दी. जैसे ही राक्षस चॉकलेट लेने नीचे झुका टिम ने तलवार राक्षस की पीठ से लगा दी. राक्षस गिड़गिड़ाने लगा— "मुझे मत मारो!" टिम ने कहा— "तो वादा करो कि आज के बाद गांववालों को कभी नहीं सताओगे!" "मैं वादा करता हूं पर तुम भी वादा करो कि हर सप्ताह ऐसी ही स्वादिष्ट चॉकलेटों का झोला मुझे ला दोगे... इनका मज़ेदार स्वाद तो मेरी ज़बान पर रह गया है और मैं तो हमेशा भूखा ही रहता हूं।"— कहकर बिग-जो टिम की तरफ आशा से देखने लगा. टिम ने हामी भर दी. बस खत्म हो गया उस दिन से दुष्ट राक्षस के अत्याचार का सिलसिला. गांववालों ने उस रात खुशी में एक शानदार जलसा किया जिसमें बिग-जो को भी बुलाया गया.
स्वीट्स
Ravalgaon
स्वीट्स, टॉफ़ी व एक्लेअर्स
उत्तमता का स्वाद
Creative Unit- 5386 Hin.

पॉपिन्स तंत्र
राम और श्याम
कहानी करे बयान
प्यारे बच्चो
सुन लो देकर ध्यान
पारले
एक खरगोश सवेरे ही उठकर
तैयार हुआ हाथ-मुंह धोकर
नाश्ता करने जब बाहर आया
दरवाज़े पर ही एक अचरज पाया।
ताज़ी-ताज़ी गाजरें दरवाज़े पर पड़ी थी
पत्तियां जिनकी नरम और हरी थीं
"धन्य भाग्य!" खुश होकर वह बोला
गाजर खाने को उसका मन डोला
गाजरों की तरफ बढ़ा वो आगे
पहले धीरे, फिर मार छलांगें
एकदम से गला फंदे में आया
छुपी बैठी लोमड़ी ने झपट के खाया
बोली लोमड़ी "देखो, फंसा ये ऐसे,
नकली गाजरें खाता भी तो कैसे!"
तो बच्चो, तुम भी रखना ध्यान
रहना सब हरदम ही सावधान
नकली को भूल के भी हाथ न लगाना
बिगड़ी तबीयत देख पड़े न पछताना
PARLE
POPPINS
नकलचियों के जाल में मत फंसना
ऐसे लोगों से बचकर ही रहना
जिस पर रहती हैं पट्टियां रुपहली
सिर्फ उसी को समझना पॉपिन्स असली